श्री

नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्यः

राजस्थानी

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और कलाकी शोध-संबंधी निबंधमाला

भाग १

राजस्थानी

[रामसिंह]

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

कोड दो-रे कँठ-सुरसूं गर्जती जै-जै भवानी
अमर साहितरी धिराणी राजभाषा लोक-वाणी

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

दिव्य करणी-साधना तूं मधुर मीरां-भक्ति-मृदु-फल
मृत्यु मृत्युंजय अमररी टेक पातलरी हलाहल
पदमणीरी आत्म-शक्ती सजल जौहररी अटल झल

धाक धारी विश्व मानी
वीर-भूरी वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

अंब ! बिछड्या बंधवांने ओक कर दे ! ओक कर दे !
ग्यान भर विग्यान भर, मां ! प्राणमें तूं प्राण भर दे !
विश्वमें गूंजे सदा ही अमर मरी अमर वाणी

राज-महिरी राजराणी
वीरवाणी जै भवानी
वीर-भूरी वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

राजस्थान

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !

तू जननी, तू जन्मभूमि है
तू जीवन, तू प्राण
तू सर्वस्व शूर-वीरोंका
भारतका अभिमान
हमारे प्यारे राजस्थान !

तेरी गौरव-मयी गोदका
रखनेको सम्मान
करते रहे सपूत निछावर
हंसते-हंसते प्राण
हमारे प्यारे राजस्थान !

जौहरकी ज्वालामें जिनकी
थी अक्षय मुसकान
धन्य वीर-बालाऐं तेरी
धन्य धन्य बलिदान
हमारे प्यारे राजस्थान !

जब तक जीवित हैं हम तेरी
वीर-व्रती संतान
ऊँचा मस्तक अमर, अमर है
तेरा रक्त निसान
हमारे प्यारे राजस्थान !

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !!

—'प्रताप'

राजस्थानी भाषा और साहित्य

[नरोत्तमदास स्वामी]

अध्याय १—प्रस्तावना

१—क्षेत्रफल और जनसंख्या

राजस्थानी महान भारत-यूरोपीय Indo-European भाषा-परिवारकी अेक शाखा है। यह राजस्थान[1] प्रान्तकी मातृभाषा है जिसमें वर्त्तमान राजपूतानेका अधिकांश भाग तथा मालवा सम्मिलित है। विस्तारमें यह प्रदेश भारतवर्षके

---

१ प्रांतका राजस्थान यह नाम प्राचीन नहीं आधुनिक है। इस शब्द का अर्थ है भारतीय देशी राजा द्वारा शासित भू-भाग। गुजराती भाषामें इस शब्द का प्रयोग अभी तक इस अर्थमें होता है। राजस्थानमें देशी राजाओंके बहुत से राज्य थे इसलिअे इसे राजस्थान या रायथान कहा जाने लगा। साहित्यमें इस शब्दका सबसे पहले प्रयोग संभवतः कर्नल टाडने किया। सरकारी रूपसे प्रांतका यह नाम गृहीत न होने पर भी यह बहुत लोकप्रिय हुआ—राजपूताना-की अपेक्षा राजस्थान नाम ही आज अधिक प्रचलित है। इसका श्रेय कर्नल टाडके सुप्रसिद्ध राजस्थानका इतिहास नामक ग्रन्थको है। भारतकी राष्ट्रीय महासभा Indian National Congress ने भी प्रांतका यही नाम स्वीकृत किया है। मालवा आजकल यद्यपि राजस्थानसे अलग समझा जाता है पर भाषाकी दृष्टिसे वह वस्तुतः राजस्थानका ही विभाग है।

राजस्थान प्रांतके लिअे कभी-कभी मारवाड़ नामका भी प्रयोग किया जाता है पर यह नाम इतना व्यापक अर्थ देनेमें असमर्थ है। अेक अर्थमें मारवाड़ राजस्थान के रेतीले मरु-प्रदेश का वाचक है और दूसरे अर्थमें राजस्थानके अन्तर्भूत अनेक राज्योंमेंसे अेक राज्य—जोधपुर—का। इन दोनों ही अर्थोंमें यह सम्पूर्ण राजस्थानका वाचक नहीं। राजस्थानका केवल पश्चिमोत्तर भाग ही मरुभूमि है अतः मेवाड़, वागड़, हाड़ौती आदि प्रदेश मारवाड़ नहीं कहे जा सकते, न इन प्रदेशोंके निवासी अपने देशको मारवाड़ या अपनेको मारवाड़ी कहते ही हैं। राजस्थानमें मारवाड़ी नामसे जोधपुर (मारवाड़) राज्यके निवासीका ही बोध होता है। राजस्थानके बाहर राजस्थानके वैश्य व्यापारी मारवाड़ी कहे जाते हैं। इस प्रकार न मारवाड़ नाम समस्त राजस्थानका बोध कराता है और न मारवाड़ी नाम समस्त राजस्थान-निवासियों का।

...ाल, बंबई आदि समस्त प्रान्तोंमें, तथा संसारके इंग्लैंड, अमरीका, यूनान, हंगरी,
...रोमानिया, पोलैंड, नार्वे, फिनलैंड, ईराक, टर्की, जापान आदि अनेकों देशोंमें

राजस्थान यहाँसे विभिन्न राज्योंमें बँटा रहा है अतः समान्य राजस्थानके लिये ओक नाम
प्राचीन साहित्यमें नहीं मिलता। यही दशा गुजरातकी भी थी किन्तु राजस्थानके साथ सब
प्रकारसे घनिष्ठ संबंध है। प्राचीन कालमें गुजरातके विभिन्न भागोंके विभिन्न नाम थे।
सोलंकियोंके शासन-कालमें गुजरातके विभिन्न भाग ओक राज्यके अन्तर्गत हुओ और गुजरातको
राजनीतिक ओकता संपन्न हुई। तभीसे सारा प्रदेश गुजरात कहलाया।

राजस्थानमें यह राजनीतिक ओकता सर्वप्रथम अंग्रेजी राज्यमें संपन्न हुई अतः तभीसे
सारे प्रान्तका ओक नाम प्रसिद्ध हुआ।

राजनीतिक ओकता न होनेपर भी सांस्कृतिक ओकता राजस्थानके विभिन्न प्रदेशोंमें बराबर
बनी रही। सांस्कृतिक दृष्टिसे गुजरात भी बहुत-कुछ राजस्थान का ओक भाग कहा जा सकता
है—गुजराती भाषाका विकास प्राचीन राजस्थानीसे ही हुआ है।

राजस्थानके विविध भागोंके प्राचीन नाम इस प्रकार मिलते हैं—

(१) पौराणिक कालमें—

उत्तरी भाग—जंगल
पूरबी भाग—मत्स्य
दक्षिण-पूरबी भाग—शिवि
दक्षिणी भाग—मालवा
पश्चिमी भाग—मरु
मध्य भाग—अर्बुद

(२) मध्य युगमें—

उत्तरी भाग—जंगल
दक्षिणी भाग—मेदपाट, वागड, प्राग्वाट
मालव, गुर्जरत्रा
पश्चिमी भाग—मरु, माड, वल्ल, त्रवणी
मध्य भाग—अर्बुद सपादलक्ष

बड़ा[1] है। भारतीय भाषाओंमें हिन्दीको छोड़कर किसी भाषाका क्षेत्र इतना बड़ा नहीं।

राजस्थानी बोलनेवालोंकी संख्या डेढ़ करोड़के ऊपर है। वे अधिकांशमें राजपूताना तथा मालवामें रहते हैं परन्तु राजस्थानके बाहर भी बड़ी संख्यामें पाये जाते हैं। भारतका कदाचित ही कोई स्थान असा हो जहां राजस्थानी सैनिक और राजस्थानी व्यापारी न पहुंचा हो। कलकत्ता, बम्बई आदि व्यापारके प्रमुख केन्द्रोंसे लेकर छोटे-से-छोटे गाँवों तकमें राजस्थानी व्यापारी मिलेगा। प्रवासी राजस्थानियोंका मुख्य केन्द्र बंगाल है। बम्बई प्रान्तमें भी वे अच्छी संख्यामें पाये जाते हैं।

जन-संख्याको दृष्टिसे राजस्थानीका भारतवर्षकी भाषाओं में (सातवां या) आठवां और संसारकी भाषाओंमें (इकीसवें से) चौबीसवां स्थान है जैसा कि नीचे लिखे आंकड़ोंसे ज्ञात होगा—

(१) चीनी	५० करोड़	(८) फ्रेंच	७ करोड़
(२) अंग्रेजी	२५ करोड़	(९) पुर्तगाली	५ करोड़
(३) रूसी	२० करोड़	(१०) बंगला	५ करोड़
(४) हिंदी (बिहारी सहित)	११ करोड़	(११) इटालियन	४½ करोड़
(५) जापानी	१० करोड़	(१२) जावानी	४ करोड़
(६) स्पेनी	१० करोड़	(१३) पोल	३ करोड़
(७) जर्मन	८ करोड़	(१४) अरबी	३ करोड़

[1] तुलनाके लिअे नीचे इनके क्षेत्रफल वर्गमीलोंमें दिये जाते हैं--

राजपूताना और मालवा १२९+२६=१५५ हजार वर्गमील

मद्रास	१,४२ हजार	पोलैंड	१,५० हजार	युगोस्लाविया	९५ हजार
बंबई	१,२३ हजार	नारवे	१,४९ हजार	इंग्लैंड	५८ हजार
युक्तप्रान्त	१,०६ हजार	फिनलैंड	१,३४ हजार	यूनान	५० हजार
पंजाब	९९ हजार	ईराक	१,१६ हजार	आयर	२७ हजार
बंगाल	७७ हजार	इटली	१,१५ हजार	...	...
मध्यभारत	९९ हजार	जापान	१,१५ हजार	...	...
बिहार	६९ हजार[2]	रोमानिया	१,१३ हजार	...	...

भारतीय आर्य-भाषाओंका चित्र

			२ करोड़
(१५) [बिहारी]	२½ करोड़	(२०) कोरियाई	१½ करोड़
(१६) तेलगू	२½ करोड़	(२१) डच	१½ करोड़
(१७) तमिळ	२½ करोड़	(२२) पंजाबी	१½ करोड़
(१८) मराठी	२ करोड़	(२३) ईरानी	१½ करोड़
(१९) रोमानियन	१ करोड़	(२४) राजस्थानी	

२—सीमाऍं

राजस्थानीके चारों ओर नीचे बतायी भाषाऍं बोली जाती है—

(१) उत्तरमें—पंजाबी

(२) पश्चिमोत्तरमें—हिन्दकी या मुलतानी या पश्चिमी पंजाबी

(३) पश्चिममें—सिंधी

(४) दक्षिण-पश्चिममें गुजराती

(५) दक्षिणमें—गुजराती, भीली और मराठी

(६) दक्षिण-पूर्वमें—मराठी, और हिन्दीकी बुन्देली नामक उपभाषा

(७) पूर्वमें—हिंदीकी बुंदेली और ब्रज नामक उपभाषाऍं

(८) उत्तर-पूर्वमें—हिन्दीकी बांगड़ू उपभाषा

---

१ तुलनाके लिये भारतवर्ष और संसारकी कुछ और भाषाओंके बोलनेवालोंके आ[illegible] नीचे दिये जाते हैं—

(१) स्यामी	१,४५ लाख		(१२) बलगेरियन	६०
(२) तुर्की	१,४१ लाख		(१३) स्वीडिश	६२
(३) उड़िया	१,१२ लाख		(१४) सिंधी	४०
(४) कन्नड़	१,१२ लाख		(१५) डेनिश	[illegible]
(५) सर्बियन	१,१० लाख		(१६) फिनलैंडी	[illegible]
(६) गुजराती	१,१० लाख		(१७) नारवेजियन	[illegible]
(७) बोहेमियन	१,०६ लाख		(१८) लिथुआनियन	
(८) मलयालम	९१ लाख		(१९) असमिया	
(९) हिंदकी	८५ लाख		(२०) काश्मिरी	
(१०) हंगेरियन	८० लाख		(२१) पश्तो	
	६९ लाख			

(११) [illegible]ानी

भारतीय आर्य-भाषाओंका चित्र
पंजाबी
मारवाड़ी
सिंधी
गुजराती
मालवी
मराठी
बिहारी
उड़िया
बंगला
असमिया

इन भाषाओंमें गुजरातीका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। सोलहवीं शताब्दी तक गुजराती और राजस्थानी अेक ही भाषा थी।[1] भीली राजस्थानी और गुजरातीकी मिश्रित भाषा है। इसी प्रकार बागड़ी भी राजस्थानी और खड़ीबोलीका मिश्रण है। ब्रजभाषाका भी राजस्थानीसे पर्याप्त साम्य है। खड़ीबोलीमें भी राजस्थानीकी अनेक विशेषताअें पायी जाती हैं जो साहित्यिक हिंदीमें नहीं पायी जाती।[2]

---

१. (A) Rajasthani, & Gujrati are hence very closely connected and are, in fact, little more than variant dialects of one and the same language. (Grierson: Linguistic Survey of India, Vol I, Pt I, Page 170).

(B) Gujrati and Rajasthani are derived from the one and same-source dialect to which the name of Old Western Rajasthani has been given ....Gujrati must have differentiated from Old Western Rajasthani in the sixteenth century into a separate language. (Dr. Suniti Kumar Chatterji: Origin & Development of Bengali Language, Vol I, Page 9).

(C) The differentiation of Gujrati from the Marwari dialect of Old Western Rajasthani is quite modern. We have poems written in Marwar in the fifteenth century which were composed in the Mother language that later on developed into these two forms of speech. (Grierson: Linguistic Survey of India, Vol I, Page 170, footnote).

(D) हाल-नी राजकीय व्यवस्था-नी घटना-मां मारवाड़ अने गुजरात जुदा पड़ी गया छे। अने अे बे देश वच्चे साहित्य-नो संबंध रह्यो नथी। मारवाड़ी भाषा-मां वर्तमान समय-नूं साहित्य न्यून होवा थी मारवाड़ी भाषा हिंदी भाषा-नूं ऊपरीपणुं स्वीकारती जणाय छे अने मारवाड़-ना लेखको आ दशौं मारे हिंदी तरफ वळता जणाय छे। गुजराती भाषा-ना वर्तमान साहित्य-मां अेवी न्यूनता नथी अने गुजराती भाषा हिंदुस्तान-नी बीजी कोई वर्तमान भाषा-नूं ऊपरीपणूं स्वीकारे तेम नथी, तथा पोता-नूं पृथक् स्वरूप खोई बीजी कोई भाषा-मां मळी जाय तेम नथी। — (रणछोड़भाई महीपतराम नीलकंठ)

२ उदाहरणके लिअे—

(१) मूर्धन्य णकारकी अधिकता (२) ळकारका प्रयोग (३) वर्तमान और भूतभूत आदि कालोंमें निष्ठंतीय या अ-कृदन्तीय रूपोंका प्रयोग, जैसे—आता है के स्थान पर आवै है और मारता था के स्थान पर मारै थो।

ोली जाती है। उत्तरमें भटियाणी और राठी बोलियोंके द्वारा पंजाबीमें,
चममें हिन्दकी और सिंधीमें, दक्षिणमें पालणपुरमें गुजराती में, पूर्वमें गवालियर
पमें बुंदेलीमें, और पूर्वोत्तरमें करौली और भरतपुरमें डांगकी बोलियों द्वारा व्रज-
ामें तथा बांगड़ू द्वारा खड़ीबोलीमें मिल जाती है। भीली भाषा राजस्थानमें
स्थानीके क्षेत्रके भीतर बोली जाती है।

३—नाम

इस भाषाका राजस्थानी यह नाम नवीन, और आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों
दिया हुआ है। अब यह नाम इतना प्रचलित हो चुका है कि देश-विदेशके
ी विद्वान इस भाषाका इसी नामसे उल्लेख करते हैं और सरकारी कागद-
तथा रिपोर्टों आदि में भी इसीका प्रयोग किया जाता है। भारतीय भाषा-
विशारदोंने भी इसी नामको सर्वमान्य किया है।

किसी भाषाका नाम या तो देश अथवा प्रान्तके नाम पर पड़ता है, या उस
ाकी साहित्यमें काम आनेवाली उपभाषा के नाम पर। क्योंकि प्रान्तका
स्थान नाम आधुनिक है अतः भाषाका राजस्थानी नाम भी आधुनिक है।

इस भाषाका पुराना नाम मरु-भाषा था। राजस्थानीके लेखकोंने अपनी
ाको बराबर मरु-भाषा ही कहा है[1]। मारू-भाषा[2], मुरधर-भाषा, मरुदेशीया
ा[3] आदि नामोंका प्रयोग भी मिलता है। राजस्थानीकी उपभाषाओंमें मार-

---

१ (क) मरुभासा निर्जल तजी करी व्रज-भासा चोज।
—गोपाल लाहोरी कृत रस-विलास

(ख) डिंगल उपनामक कहुंक मरु-वानीहु विधेय।
—सूर्यमल्ल मिसण कृत वंश-भास्कर

(ग) मरु-भूम-भासा-तणो मारग रमै आछो रीतसूं।
—कवि मंछ कृत रघुनाथरूपक

२ कर आणंद कंवर सु वहण मारू-भाषा-भट।
—कवि मोडजी कृत पाबूप्रकास।

३ सूर्यमल मिसणने वंशभास्करमें बराबर 'मरुदेशीया भाषा' शब्दका प्रयोग किया है।

वाड़ी सबसे प्रधान है और सदासे रही है। जिस प्रकार आजकल हिन्दीकी अनेक उपभाषाओंमेंसे खड़ीबोली साहित्यकी भाषा है उसी प्रकार मारवाड़ी सदासे साहित्यकी भाषा रही है। राजस्थानके सभी भागोंके लेखकोंने साहित्य-रचनाके लिअे मारवाड़ीको ही अपनाया। डिंगलकी आधार-भूत भाषा भी मारवाड़ी ही है। फलतः राजस्थानीके लिअे सदा मरुभाषा शब्द ही प्रयुक्त हुआ। प्रान्तका नाम राजस्थान होने पर भाषा भी राजस्थानी कहलाने लगी। बोलचालमें राजस्थानीके लिये मारवाड़ी नामका प्रयोग अभी तक होता है।

साहित्यिक राजस्थानी, विशेषतः चारणी साहित्यकी भाषा, डिंगल नामसे प्रसिद्ध रही है। यह नाम भी विशेष प्राचीन नहीं है। इसका विवेचन आगे किया जायगा।

यह भाषा प्राचीन कालसे अेक स्वतन्त्र भाषा रही है। आठवीं शताब्दीमें उद्योतनसूरिने कुवलयमाला नामका अेक कथा-ग्रन्थ लिखा जिसमें अठारह देश-भाषाओंको गिनाया गया है। उनमें मरुदेशकी भाषाको भी गिनती की गयी है। सत्रहवीं शताब्दीमें अबुलफजलने अपने आईने-अकबरी ग्रन्थमें भारतवर्षकी प्रमुख भाषाओंमें मारवाड़ीको भी गिनाया है।

४—शाखाअें

बोलचालकी भाषा कोस-कोस पर बदलती है अतः किसी भी भाषामें शाखा-प्रशाखाओंका होना स्वाभाविक है। राजस्थानीके भी अनेक भेद-प्रभेद हैं। ग्रियसनके अनुसार राजस्थानीके कोई बीस भेद हैं। मैकालिस्टरने अकेली जयपुरीके ही १४ भेदोंका उल्लेख किया है।

राजस्थानीके अनेक भेद-प्रभेद होने पर भी उनमें परस्पर इतना अन्तर नहीं कि अेकको बोलनेवाला दूसरेको भली भांति न समझ सके। व्याकरणका मूल ढांचा सबका समान है। व्याकरणके ढांचेकी यह समानता ही राजस्थानीको ब्रजभाषा, खड़ीबोली और गुजराती से पृथक करती है। यह बात भी ध्यानमें रखना आवश्यक है कि अनेक भेद-प्रभेदोंके होने पर भी समस्त राजस्थानमें साहित्य और शिक्षाकी भाषा सदा अेक ही रहती आयी है। हिन्दीके आगमनके पूर्व साहित्यकी अेक ही भाषा प्रान्त भरमें प्रचलित थी। हां, ब्रजभाषाका प्रयोग भी यदा-कदा किया जाता था।

राजस्थानीकी चार मुख्य शाखाऐं हैं —

(१) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी—इसका क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर और शेखावाटीका प्रदेश है। जोधपुरी, मेवाड़ी, थळी और शेखावाटी बोली—ये इसकी मुख्य प्रशाखाऐं हैं।

(२) पूर्वी राजस्थानी या ढूंढाड़ी-हाड़ौती- इसका क्षेत्र जयपुर, हाड़ौती आदिका पूर्वी प्रदेश है। जयपुरी (ढूंढाड़ी) और हाड़ौती इसकी मुख्य प्रशाखाऐं हैं।

(३) उत्तर-पूर्वी राजस्थानी या मेवाती—इसका क्षेत्र अलवर और उसके आसपासका प्रदेश है। इसकी अेक अंतःशाखा अहीरी है।

(४) दक्षिणी राजस्थानी या माळवी—इसका क्षेत्र मालवाका प्रदेश है जिसमें इंदौर, भोपाल, धार, रतलाम, सीतामऊ आदि राज्य तथा उज्जैन आदि प्रदेश सम्मिलित हैं। इसकी अेक अन्तःशाखा नेमाड़ी है।[1]

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित भाषाओं और बोलियोंके साथ भी राजस्थानी का गहरा सम्बन्ध है—

(१) बंजारी—यह राजस्थानसे बाहर रहनेवाले बंजारोंकी भाषा है। स्थानानुसार इसके अनेक भेद हैं। ये बंजारे राजस्थानके मूल निवासी थे और व्यापारके सिलसिलेमें दूर-दूर तक पहुंचते थे। पिछली शताब्दियोंमें वे उन-उन प्रदेशोंमें बस गये और वहांके स्थायी निवासी हो गये, पर अपनी भाषाको अपनाये रहे।

---

१ तुलनाके लिअे चारों बोलियोंकी जनसंख्याके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं (ये आंकड़े पुराने हैं परंतु इनसे बोलियोंकी आपेक्षिक विशेषताओंका अनुमान हो सकेगा)—

१	पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी	६०,८८,०००
२	पूर्वी राजस्थानी	२९,०७,०००
३	उत्तरपूर्वी	१५,७०,०००
४	मालवी	४३,५०,०००
	नेमाड़ी	४,७४,०००
५	बंजारी-गूजरी	४,५५,०००
६	अज्ञात	४,५१,०००
		१,६२,९५,०००

(२) गूजरी—यह विशेषतः हिमालयकी तराईमें बसे हुये गूजरों, अहीरों आदिकी बोलियोंका समूह है।

(३) भीली—यह गुजराती और राजस्थानीके बीचकी मिश्रित भाषा है।

(४) पहाड़ी वर्गकी भाषाअें—इनका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनमें प्रमुख नेपाली, कुमाउंनी, गढ़वाली आदि हैं। नेपाली नेपालके गोरखोंकी भाषा है जो राजस्थानसे जाकर वहाँ बसे थे।

(५) भारतीय सांसियों या जिप्सियों Gypsies की बोलियोंका संबंध भी राजस्थानीसे है। इनके पहाड़ी, भामटी, बेलदारी, ओडकी, लाडी, मछुरिया, सांसी, कंजरी, नटी, डोमी आदि अनेक भेद-प्रभेद हैं।

राजस्थानीकी चारों शाखाओंमें विस्तार और साहित्य दोनों ही दृष्टियोंसे पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी विशेष महत्वपूर्ण है। गुजराती प्राचीन पश्चिमी राजस्थानीसे ही विकसित हुई है। राजस्थानीका प्रायः समस्त साहित्य इसी पश्चिमी राजस्थानीमें, या यों कहिये उसकी प्रमुख उपशाखा जोधपुरीमें, लिखा गया है[१]। डिंगलका मूलाधार भी यह पश्चिमी राजस्थानी ही है। राजस्थानीकी दूसरी शाखाओंमें लोक-साहित्यके अतिरिक्त अन्य साहित्य नाम-मात्रको, नहींके बराबर, है।

---

१ वर्तमान शताब्दीमें पश्चिमी राजस्थानीकी अेक दूसरी शाखा [illegible] भी कुछ साहित्य लिखा गया है।

राजस्थानीकी चार मुख्य शाखायें हैं—

(१) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी—इसका क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर और शेखावाटीका प्रदेश है। जोधपुरी, मेवाड़ी, थळी और शेखावाटी बोली—ये इसकी मुख्य प्रशाखायें हैं।

(२) पूर्वी राजस्थानी या ढूंढाड़ी-हाड़ौती— इसका क्षेत्र जयपुर, हाड़ौती आदिका पूर्वी प्रदेश है। जयपुरी (ढूंढाड़ी) और हाड़ौती इसकी मुख्य प्रशाखायें हैं।

(३) उत्तर-पूर्वी राजस्थानी या मेवाती—इसका क्षेत्र अलवर और उसके आसपासका प्रदेश है। इसकी अेक अंतःशाखा अहीरी है।

(४) दक्षिणी राजस्थानी या माळवी—इसका क्षेत्र मालवाका प्रदेश है जिसमें इंदौर, भोपाल, धार, रतलाम, सीतामऊ आदि राज्य तथा उज्जैन आदि प्रदेश सम्मिलित हैं। इसकी अेक अन्तःशाखा नेमाड़ी है।[1]

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित भाषाओं और बोलियोंके साथ भी राजस्थानी का गहरा सम्बन्ध है—

(१) बंजारी—यह राजस्थानसे बाहर रहनेवाले बंजारोंकी भाषा है। स्थानानुसार इसके अनेक भेद हैं। ये बंजारे राजस्थानके मूल निवासी थे और व्यापार सिलसिलेमें दूर-दूर तक पहुंचते थे। पिछली शताब्दियोंमें वे उन-उन प्रदेशोंमें गये और वहांके स्थायी निवासी हो गये, पर अपनी भाषाको अपनाये रहे।

---

१ तुलनाके लिअे चारों बोलियोंकी जनसंख्याके आंकड़े नीचे दिये जाते पुराने हैं परंतु इनसे बोलियोंकी आपेक्षिक विशेषताओंका अनुमान हो सकेगा।

१	पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी	६०,८८,००
२	पूर्वी राजस्थानी	२९,०७,०
३	उत्तरपूर्वी	१५,८
४	मालवी	
	नेमाड़ी	
५	बंजारी	
६	अज्ञात	

राव केल्हणका वि० सं० १४७५ का शिलालेख

राव केल्हणका वि० सं० १४७५ का शिलालेख

[दशरथ शर्मा]

श्रीगंगासिंह गोल्डन जुबिली म्यूजियम, बीकानेर, में महिषासुर-मर्दिनीकी अेक अत्यन्त सुन्दर प्रस्तर-मूर्ति वर्तमान है। भाग्यवशात् इसका मुख भग्न न होता तो यह अपने ढंगकी अेक ही चीज होती। वर्तमान अवस्थामें भी यह बीकानेरी शिल्पका उत्कृष्ट नमूना है। कठोर जैसलमेरी पत्थर पर भाव-भंगी और कार्य-शक्तिका इतना सफल चित्रण कोई सरल काम न रहा होगा।

मूर्तिके नीचे यह लेख खुदा है—

पंक्ति १—संवत् १४७५ वर्षे कातिक[1] सुदि षष्टी (ष्ठी) सु (शु) क्रदिने

„ २—देवी श्री घंटालि सह। महाराज श्री केल्हण

„ ३—करावितं[2]। कमर[3] श्री चाचा॥ सूत्रधार हापाघटितं॥[4]

लेखको खुदवानेवाला महाराज श्रीकेल्हण अपने समयका प्रसिद्ध व्यक्ति था। जैसलमेरके रावल केहरका सबसे बड़ा पुत्र होने पर भी पिताकी इच्छाके बिना अन्यत्र सगाई कर लेनेके कारण, वह जैसलमेरकी गद्दी पर न बैठ सका था। किन्तु वीर पुरुष अैसी असुविधाओंकी परवाह नहीं करते। वह पहले आसनी-कोटमें जाकर रहा, किंतु यहां जैसलमेरसे हर समय झगड़ा होनेकी शंका बनी रहती थी। बीकमपुर उस समय खाली पड़ा था। चारों तर्फसे जंगलको साफ कर केल्हणने उसे अच्छी तरह बसाया।[5]

कुछ समय बाद केल्हणने पूगल पर भी कब्जा कर लिया। यह पहले रावळ

---

१ 'क' ऊपर से जोड़ा गया है।

२ 'कारित' के स्थान पर राजस्थानी शिलालेखोंमें बहुधा 'करावितं' और 'करापितं' का प्रयोग मिलता है।

३ नैणसीकी ख्यात, भाग २ पृष्ठ ३५४।

४ लेखकी छापके लिअे मैं म्यूजियमके असिस्टेंट क्यूरेटर कंवर सगतसिंहका अनुगृहीत हूं।

५ वही, पृष्ठ ३५८। नैणसीकी अेतद्विषयक कथामें कुछ और बातें भी हैं।

लक्ष्मणसेनके पुत्र राणगदे भाटीके अधिकारमें था। राणगदे भाटी मंडोरके राव चूंडाके हाथ मारा गया। पूगलकी विधवा रानीको इस वैरका बदला लेनेका वचन देकर केल्हण पूगलके समान समृद्ध स्थानका स्वामी बन गया।[1]

देरावरका प्रसिद्ध दुर्ग इसने इससे अधिक छल-प्रपंच से हस्तगत किया था। प्रसिद्ध ख्यात-लेखक नैणसीने यह कथा इस प्रकार दी है —

> फेहरका सगा भाई, सोम, देरावरमें मर गया, तब ४०० मनुष्योंको लेकर राव केलण वहा शोक मोचन करानेको गया। सोमके पुत्र सहसमलने उसको गढ़में न घुसने दिया, परन्तु वह कई सौगन्द-शपथ व कौल-वचन करके गढ़ में आया और पाच-सात दिन तक रहा। सहसमलने कहलाया कि अब जाओ, परन्तु उसने गढ़ न छोड़ा। तब सहसमल-रूपसी क्रोधित होकर अपना मालमता गाड़ोंमें भर, गढ़ छोड़कर, निकल गये और सिंधमें जा रहे। देरावर केलणके हाथ आया।[2]

राव केल्हणने अपने राज्य-विस्तारके लिये अनेक युद्ध किये होंगे किन्तु इतिहाससे हमें अेक ही ज्ञात है। मंडोवरका राव चूंडा भाटियोंका प्रबल विरोधी था। इसने भाटियोंके अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया था, अेवं उन्हें अनेक अन्य बातोंमें भी नीचा दिखाया था। भाटियोंने केल्हणकी अध्यक्षतामें अपने अपमान, वैर, और भूमिनाशका बदला लेनेकी तैयारी की। किंतु राव चूंडासे अकेले लोहा लेना सहज न था। अतः मुलतानके सैयदों, जांगलूके सांखलों और जोहियों आदि अनेक जातियों से मिलकर केल्हणने चूंडा पर आक्रमण किया। राव चूंडा युद्धमें काम आया और केल्हण अेवं उनके मित्र विजयी हुअे।[3]

---

१ वही पृष्ठ ३४९।

२ वही, पृष्ठ ३५९।

३ वही, पृष्ठ ३५८। इससे अधिक प्राचीन अेवं प्रामाणिक वर्णन बीठू सूजा के 'छन्द राउ जैतसी-रउ' में देखें।

केल्हणने बहुत वर्ष तक राज्य किया। यह प्रसिद्ध है कि उनके अधीन इतने दुर्ग थे—

पूगल बीकमपुर पुगह विम्मणवाह मरोट।
देरावर नै केहरोर केलण इतरा कोट॥[1]

केल्हणके बाद उसका पुत्र चाचा, जिसका इस शिलालेखमें उल्लेख है, गद्दी पर बैठा। इसने बीकमपुर अपने भाई रिणमल्लको दे दिया। राव चाचाके अधिकारमें इतने दुर्ग थे पूंगल, केहरोर, मरोठ, मम्मणवाहण और देरावर। बीकानेर राज्य में पूंगलका ठिकाना अब भी इनके वंशजों के अधिकारमें है।[2]

शिलालेखमें सूत्रधार हापाका भी उल्लेख है। वह वास्तवमें अच्छा कलाकार रहा होगा। उसने इस सुन्दर मूर्तिका निर्माण कर अपना नाम चिरस्थायी कर लिया है।

लेखका समय सम्वत १४७५ है। केल्हण कम-से-कम उस समय तक जीवित था। प्रस्तर-मूर्ति सम्भवतः पूगलसे प्राप्त हुई है। यदि यह अनुमान ठीक है तो केल्हणका वहां इस सम्वतसे पूर्व अधिकार हो चुका होगा।

---

1 वही, पृष्ठ ३५९।

2 वही, पृष्ठ, ३६०।

राजस्थानी साहित्यरा निर्माण और संरक्षणमें जैन विद्वानांरी सेवा

[अगरचन्द नाहटा]

जैन धरमरा तीर्थंकरां और विद्वानां लोक-भाषारो महत्त्व सरूसूं ही भली भांत समझ लियो हो। जनतारै हिवड़ै तांई पूगणरो अेकमात्र साचो साधन लोक-भाषा हीज है इण बातनै वां आछी तरांसूं हृदयंगम कर ली ही। ठेटसूं ही वां आपणा उपदेश लोगांरी बोलचाळरी भाषामें दिया। जकी बातनै आपणा विद्वान आज समझण लागा है उण बातनै जैन धरमरा महात्मावां हजारां बरसां पैली समझली ही। भगवान महावीररी इण सूझनै पछै आवणवाळा घणकरा धर्म-प्रचारकां और पंथ-थापकां माथै चढायी और आप-आपणा पंथांरो साहित्य लोक-भाषामें — साधारण लोगांरी बोलीमें — बणायो।

प्राकृतरै पछै अपभ्रंशरो घणकरो साहित्य जैन विद्वानांरी रचना है। अपभ्रंश पछै राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी, मराठी, तेलगू, कन्नड़ वगैरा लोक-भाषावांमें भी वै बराबर साहित्यरी रचना करता रया। इण भाषावांरो घणो-सो आरम्भिक साहित्य जैन लेखकांरो बणायोड़ो है।

लोकभाषामें साहित्य-रचनारो काम जैन विद्वानां बराबर चालू राख्यो जकै कारण इण भाषावांरै क्रमिक विकासरो अध्ययन करणमें जैन-साहित्यरो अध्ययन घणो जरूरी है। जकी शताब्दियांरा लोकभाषारा उदाहरण दूजा साहित्यमें जोयां ही को लाधै नी वां शताब्दियांरा उदाहरण जैन-साहित्यमें भरपूर लाधसी।

राजस्थानीमें तो जैन-साहित्यरो घणो मोटो भंडार है। राजस्थानीरै आरम्भसूं लगा'र ठेट आज तांई कोई दशाब्दी इसी कोनी हुसी जिणमें रचियोड़ी जैन विद्वानांरी रचनावां नहीं मिलसी। राजस्थानी भाषारो अखंड इतिहास लिखणो हुवै तो जैन-साहित्यरी मदतसूं सै'ज ही लिखीज सकसी। और ओ साहित्य कठण हिंगळमें नहीं पण लोगांरी बोलचालरी भाषामें है जकैनै जनता आज भी बिना टीका-टिप्पणीरी सायतारै समझ सकै है।

नैतिक दृष्टिसूं भी जैन-साहित्यरो घणो महत्त्व है। रोचक हुतां थकां भी जैन-साहित्य पवित्र भावनानैं जनम देवै जिसो है। जैन विद्वानां आपरै हीज धरमरी कहाण्यां लिखी हुवै इसो बात भी कोनी। लोगांमें चलती लौकिक कथा-कहाण्यां माथै भी जैनांरो घणो मोटो साहित्य है। अेक विक्रमाजीत राजारी कथावांसूं सम्बन्ध राखती पचाससूं ऊपर जैन विद्वानांरी बणायोड़ी पोथियांरो पतो लाग्यो है।

जैन विद्वानांरो लिखियोड़ो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनूं रकमरो है। पद्यरा सबसूं मोटो ग्रंथ तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमालजीरी भगवती-सूत्ररी ढाळां है जकांरो विस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है। गद्य-ग्रंथांमें विस्ताररी दृष्टिसूं महत्त्वपूर्ण भगवती सूत्ररी गद्य भाषा-टीका है जकैरो विस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है। राजस्थानीरो घणो महत्त्वपूर्ण इतिहास-ग्रंथ मुहणोत नैणसीरी ख्यात है। इण ग्रंथरी प्रौढ भाषाशैलीरी प्रशंसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वानां करी है। राजस्थानीरो प्राचीन गद्य लगभग सगळो-र-सगळो जैन लेखकांरी रचना है।

कोई डोढ हजार बरसांसूं राजस्थान और गुजरातमें जैन-धरमरो प्रचार जोर-सोरसूं रयो है। गांव-गांवमें ओसवाळ वगैरा जैन श्रावकांरो प्रादुर्भाव हुयो और वांरा गुरु जैन-मुनि बराबर आवण-जावण लागया। धीरे-धीरे कईक जैन यति गांवांमें स्थायी रूपसूं बस भी गया। आं लोगांरै उपदेससूं सईकड़ां हो लोग जैन-धरममें दीक्षित हुया, विद्वान बण्या और मातृभाषारो भंडार भरणमें तत्पर हुया। साथ ही वै लोग जका-जका आछा-आछा ग्रंथ देखता वांरी नकलां भी करता रया। हजारां रास, चौपाई, भास, धवळ, संबंध, प्रबन्ध, ढाळ वगैरांरी रचना करी जकांरा प्रमाण आठ-दस लाख श्लोकांसूं कम कोनी। गद्यमें भी इण तरां बाळावबोध, टब्बा वगैरा टीकावां लिखी जकांरो प्रमाण भी छे-सात लाख श्लोक जरूर हुसी। कई-कई विद्वान तो इसा हुया जकां अेकलांही लाख-लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणांमें तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजी तथा कविवर जिनहर्षजी विशेष कर उल्लेखनीय है जैन सिवाय दूजा विद्वानांरै शायद ही कैई इत्ते परिमाणमें राजस्थानी भाषामें रचना करी हुवै। जैनांरै वास्तै आ घणै गौरव री बात है।

रास-चौपाई वगैरा बडा ग्रंथांरै सिवाय राजस्थानीमें लिखियोड़ो जैन

विद्वानांरो फुटकर साहित्य भी भारी इणोकी प्रमाणरो है। स्तवन, सज्झाय, प
गीत, छंद, हियाळी, सिलोका, पूजा संवाद, दूहा वगैरा फुटकर साहित्यरो त
कोई पार ही कोनी। समयसुंदरजी जिसा कवियां ४००-५०० पद बणाया है
सो साहित्य सब भांतरो है--नीतिरो, विनोदरो, उपदेसरो, भक्तिरो। जैन
विद्वानांरी राजस्थानी साहित्यरी सेवा सर्वांगीण है। कोई इसो विषय कोनी
जिण पर जैन लेखकां कोई रचना नहीं लिखी हुवै।

जैन विद्वानां राजस्थानी साहित्यरी कोरो रचना ही को करी नी पण राज
स्थानी साहित्यरी रक्षामें भी घणो भाग लियो। जैन और जैनेतर दोनूं विद्वानांर
लिखियोड़ा ग्रंथांनें घणं जतन और घणी सम्हालसूं आपरा भंडारांमें राख्या
जैनेतर विद्वानांरा घणा ग्रंथांरी पड़तां आज जैन-भंडारांरै सिवाय दूसरी जाग्यां
अलभ्य है। नरपति नाल्हरै वीसलदे-रासो ग्रन्थनें जैन विद्वानां ही ज नष्ट हुवण
सूं बचायो। इसा-इसा हजारां ग्रन्थ है जकांनें आज तांई कायम राखणरो
जस अेकमात्र जैन विद्वानांनें है

जैन विद्वानां अेक और मोटो काम करियो। वां आपरी रचनावां बोल-
चालरी भाषामें लिखी जियांन छुन्द भी घणा-सा लोक-साहित्यसूं लिया
जनतामें चालु गीतांरी ढाळां लेयनें वां आपणी कविता लिखी। आं ढाळांरा नाम
और पैल्डी पंक्तियां भी वां सु-रक्षित राखी। इसी ढाळां अथवा देशियांरी अेक
सूची संपाईरा जैन विद्वान मोहनलाल दलीचन्द देसाईजी बणायो है। लोक-
प्रचलित गीतांनें लिपि-बद्ध करनें सुरक्षित राखणरो काम भी अनेक जैन विद्वान
किया है। लोक-साहित्यनें इण तरां अमर करणरी जैन विद्वानांरी सूझरै साम
माथो आपैई आदरसूं झुक जावै है।

घणा साहित्यिक विद्वानां जैन साहित्यनै अेक संप्रदायरो साहित्य बतायनें
उणनै उपेक्षारी दृष्टिसूं देख्या है पण वांरो ओ विचार भ्रांति-पूर्ण है। जैन साहित्य-
रो अ-परिचय हो वांरै इण विचाररो कारण है। वास्तवमें जैन साहित्यरो घणो
भाग इसो है जको सार्वजनिक साहित्य कहीज सकै है। हजारूं राजस्थानी
जैन कवि और लेखक आज अंधकारमें पड़्या है। जैन साहित्यरै प्रकाशमें आणैसू
इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी। इण वास्तै सबसूं जरूरी बात
जैन साहित्यनें प्रकाशमें लावणरी है। आशा है राजस्थानरा विद्वान तथा जैन
धनी-मानी अठीनें ध्यान देसी।

डूंगजी-जवारजीरो गीत

[राजस्थानमें डूंगजी-जवारजीका गीत बहुत प्रसिद्ध और लोक-प्रिय है। अबतक यह लिखित रूपमें प्राप्य नहीं था। राजस्थानी लोकगीतोंके परिश्रमी अन्वेषक और संग्रहकर्त्ता श्रीयुत गणपति स्वामीने इसे लिपिबद्ध करके साहित्य-संसारका महान उपकार किया है। गीतकी प्रतिलिपि हमें पिलाणीके बिड़ला कालेजके अधिकारियोंकी कृपासे प्राप्त हुई है जिसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।]

(१)

सिमरूं देवी सारदा कोइ तनै भवानी ! ध्याऊं
जां मरदांरी छावळी मैं च्यार खूंटमें गाऊं

(२)

डूंग न्हाररी कोटड्यां जुड़ी कचेड़ी आय
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, खूब पड़ै रजवाड़
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, डूंगसिंघ सरदार
तीनूं मिळ मेळा हुवै तो करै तीसरी बात

---

(१)

देवी सरस्वतीको स्मरण करता हूं। हे भवानी ! तुम्हारा ध्यान करता हूं। जिससे वीरोंकी कीर्तिको मैं चारों दिशाओंमें गा सकूं।

(२)

सिंहके समान डूंगरसिंहकी कोटड़ीमें कचहरी आकर जुड़ी। जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। खूब......पड़ रहा था। जाट लोटिया, मीणा करणिया और सरदार डूंगरसिंह—ये तीनों जब मिलकर इकट्ठे होते हैं तो तीसरी (नयी) बात करते हैं। डाकू डूंगरसिंह बोला—अरे लोटिया जाट ! तू सुन, आदमियोंके लिये मोटी-ताजी बकरी

डूंगजी-जवारजीरो गीत

[राजस्थानमें डूंगजी-जवारजीका गीत बहुत प्रसिद्ध और लोक-प्रिय है। अबतक यह लिखित रूपमें प्राप्य नहीं था। राजस्थानी लोकगीतोंके परिश्रमी अन्वेषक और संग्रहकर्त्ता श्रीयुत गणपति स्वामीने इसे लिपिबद्ध करके साहित्य-संसारका महान उपकार किया है। गीतकी प्रतिलिपि हमें पिलाणीके बिड़ला कालेजके अधिकारियोंकी कृपासे प्राप्त हुई है जिसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।]

(१)

सिंवरूं देवी सारदा कोइ सनै भवानी! ध्याऊं
जो मरदांरी छावळी मैं च्यार खूंटमें गाऊं

(२)

डूंग म्हारली कोटड़यां जुड़ी कचेड़ी आय
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, खूब पड़ै रजवाड़
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, डूंगसिंघ सरदार
तीनूं मिळ मेळा हुवै तो करै तीसरी बात

---

(१)

देवी सरस्वतीको स्मरण करता हूं। हे भवानी! तुम्हारा ध्यान करता हूं। जिससे वीरोंकी कीर्त्तिको मैं चारों दिशाओंमें गा सकूं।

(२)

सिंहके समान डूंगसिंहकी कोटड़ीमें कचहरी अच्छी जुड़ी। जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। खूब......पड़ रहा था। जाट लोटिया, मीणा करणिया और सरदार डूंगसिंह—ये तीनों जब मिलकर इकट्ठे होते हैं तो तीसरी (नयी) बात करते हैं। डाकू डूंगसिंह बोला—अरे लोटिया जाट! तू सुन, [illegible] लिये मोटर बारी बाकी

बोल्यो डाकू डूँगसिंघ, तूं सुण रे लोट्या जाट !
मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्यो घास
मरदांमें तूँ मरद आगलो, हेस्यांरो तूँ लाट
रामगढ़की ढेर लगा दे, जद जाणूँ साय जाट

लोट्यो जाट करणियो मीणो ज्यांरो चालो मेळ
डूँग न्हार री भरी कचेड्यां लीनी वात सकेळ
लोट्यो जाट करणियो मीणो अकलां मांय वजीर
भेस पलट वै चल्या रामगढ, जाणूं छूट्या तीर
लोट्यै लीनी ढोलकी, फाइ, करण्यै लीनूं बांस
घर-घर घालै ख्याल-तमासा, घर-घर भाळै माल
रामगढ़रै सेठांरी वै लदी कतारां जाय
सोनारी पुतळियां, मरदां ! मांय पूंगिया भार
पुरसामलजी, अणंतमलजी, वां - सेठां रो माल
रामगढ़ सूं चली कतारयां अजमेरां नै जाय

नहीं रही, घोड़ोंके लिये घास बाकी नहीं रहा, तू मर्दोंमें श्रेष्ठ मर्द है, बहादुरोंका तू लाट (राजा) है, तू रामगढ़की जायगी कर दे, हे जाट ! तब मैं तुझे समझूंगा ।

जाट लोटिये और मीणे करणियेने, जिनका प्यारा मेल था, डूंगसिंघकी भरी कचहरीमें इस बातको संभाल लिया । जाट लोटिया और मीणा करणिया बुद्धिमें वजीर थे । वे वेश बदलकर रामगढ़को चले मानो तीर छूटे हों । लोटियेने ढोलक ली और करणियेने बांस लिया । घर-घरमें खेल-तमाशा करने लगे और घर-घरमें माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे) ।

रामगढ़के सेठोंकी लदी हुई कतारें आ रही थीं जिनमें भीतर सोनेकी पुतलियां और मूंगोंके ढेर थे । पुरसामलजी और अनंतमलजी थे उन सेठोंके नाम थे । रामगढ़से चली हुई कतारें अजमेरको जा रही थीं । जाट लोटिये और मीणे करणियेने खबर दी कि हे डूंगजी ! लूटता है तो आशापुराके दर्शनोंसे [illegible] (धाड़े) नहीं रहेंगे ।

घोड्यो ! डाकू डूँगसिंघ, सूं सुण रे लोट्या जाट !
मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्यो घास
मरदांमें सूँ मरद आगलो, हेरयांरो तूं लाट
रामगढ़की हेर लगा दे, जद जाणूँ ताय जाट

लोट्यो जाट करणियां मीणो ज्यांरो चालो मेळ
डूँग न्हार री भरी कचेड़्यां लीनी वात संकेळ
लोट्यो जाट करणियो मीणो अकलां मांय : वजीर
भेख पळट वै चल्या रामगढ, जाणं छूट्या तीर
लोट्यै लीनी ढोलकी, काइ, करण्यै लीनूं वांस
घर-घर घालै ख्याल-तमासा, घर-घर भाळै माल
रामगढ़रै सेठांरी वै लदी कतारां जाय
सोनारी पूतळियां, मरदां ! मांय मूंगिया भार
घुरसामलजी, अणंतमलजी, वां - सेठां रो माल
रामगढ़ सूं चली कतारयां अजमेरां नै जाय

नहीं रही, घोड़ोंके लिए घास बाकी नहीं रहा, तू मर्दोंमें श्रेष्ठ मर्द है, जासूसोंका तू लाट (राजा) है, तू रामगढ़की जासूसी कर दे, हे जाट ! तब मैं तुझे समझूंगा ।

जाट लोटिये और मीणे करणियेने, जिनका प्यारा मेल था, डूंगसिंघकी भरी कचहरीमें इस बातको संभाल लिया । जाट लोटिया और मीणा करणिया बुद्धिमें वजीर थे । वे वेश बदलकर रामगढको चले मानो तीर छूटे हों । लोटियेने ढोलक ली और करणियेने बांस लिया । घर-घरमें खेल-तमाशा करने लगे और घर-घरमें माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे) ।

रामगढके सेठोंकी लदी हुई कतारें जा रही थीं जिनके भीतर सोनेकी पुतलियां मूंगोंके ढेर थे । घुरसामलजी और अनंतमलजी ये उन सेठोंके नाम थे । रामगढसे कतारें अजमेरको जा रही थीं । जाट लोटिये और मीणे करणियेने [illegible] लूटता है तो आडावलाके पहाड़ोंमें लूट ले; आडावला पार करने [illegible] रहेंगे ।

झड़वासैका नौलसिंघजी
भैरूंसिंघजी घणी करी मनवा
घणा दिनासूं आया पावणा, गोठ जीमता जा
दूधां धोय'र चावळ रांध्या, घिरतां धाय'र दा
बोरी भर-भर खांड मंगायी, घिरत चलाया खा

३)

रामगढ़का सेठांनै जद खबर पड़ी है जा
सेठां लिख परवानो भेज्यो दिल्लीरै दरवा
लूंटी म्हांरी लदी कतारां, लूंट्यो नौ लख मा
म्हांरी धरामें हिल्यो डूंगजी, लूँट-लूंटकै खा
अबकै तो यँ लूंटो कतारां, अब लूंटैगो हेल
आसामी ठस पड़गी, होगी रुपियाकी धेल
सेठां लिख परवानो भेज्यो, बडै सा'बनै देण
डूंगसिंघ म्हांरै लारै पड़ग्यो पकड़ कैद कर लेण

---

(३)

रामगढके सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दि
में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी लदी हुई कतारोंको लूट लिया,
माल लूट लिया, यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है, इसे लूट
है, इस बार तो उसने कतारें लूटी हैं, अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा,
सब ठस पड़ गयी हैं, रुपयेकी धेली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर
और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंघ हमारे पी
है, इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलक
पहुँची और सीकरके ठाकुरने कहा—हे सीकरके प्रतापसिंघ! डूंगसिंघको
दे। ठाकुरने कहा—वह हमारा भाई-भतीजा (कुटुंबी) लगता है,
सकता, वह झड़वासेमें बैठा गोठका माल खा रहा है।

चंदनो सा' निरमळो आयो, रीपड़ बडो हुंस्यार
झळमळ सो माथो करै, नैणा जळै मुसाळ
इसड़ो रीजड़ अेक है, रे ! जे होवै दो-च्यार
मार-मार फिरंगांनि कर दै कळकतैके पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पक्का पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी न्हारो ईंदो न्हार
लाल किलेके मांयनै डूंग न्हार रख लेणा
हुकम नहीं है काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूंतो चढ्यो जवारसिंघ, गढ बठोठमें आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनूं साथै लायो
में होळीनें ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ
बोतल सो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तूं पी तूं पी' हो रही, काइ, करै घणी मनवार

जगमग कर रहा है, नेत्रोंमें मशालें जल रही हैं, ऐसा राजपूत यह एक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दें; यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता है; ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया! यह सिंहोंका सिंह है; इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुकम नहीं है, नजरकैद कर देना।

(४)

जुहारसिंघ सीकरसे चढ़ा और बठोठके किलेमें आया। जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनोंको अपने साथ लाया। ठीक होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान होने लगा। बोतलें जगाजग कर रही थीं, प्याले सजीव होकर पुकारते थे। 'तू पी, तू पी' इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे।

जब इसकी भनकार कानमें पड़ी तो रानी (डूंगजीकी पत्नी) महलसे बाहर निकली। उसने खड़े-ही-खड़े ताना दिया—तुम्हारे शराब पीनेको धिक्कार है! किसलिए

बड़बड़ चावै आगळी, बो कड़कड़ चावै जाड़
नैण जगै ज्यूं दीवला, ज्यांरी सवा हाथरी नाड़

जद यूं बोल्यो डूंगसिंघ, थे सुणल्यो फिरंग्यां ! बात
फिटफिट थांरी जामणवाळी, फिटफिट थांरो बाप
आठ गादड़ा मिल थे आया, कर्‌यो सिंघसूं घात
सूतै सिंघनै धोखै पकड़्‌यो फिटफिट थांरी जात
मेरी अकेली जान है, रे ! थांरै पलटण साथ
अेकर ढीलो छोड़ द्यो, थांनै फेर दिखाऊं हाथ
भैरूंसिंघनै भली विचारी, भलो निभायो मेळ
आछी करी जुंवारी मेरी, भलो दियो नारेळ
दुनियांमें तैं नांव कढायो, मूंढो हुयग्यो काळो
भाण-भनेई कै लागै तूं दगावाजको साळो

डूंग न्हारनै पकड़कर वां पींजस दियो बिठाय
आगरैकै लाल किलैमें दीनूं छै पुंचाय

लगा, कड़कड़ करता डाढ़ोंको चबाने लगा। उसके नेत्र अैसे जल उठे जैसे दीपक जलते हों। उसकी गर्दन सवा हाथ लम्बी थी।

तब डूंगसिंघ यों कहने लगा—हे फिरंगियों ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी जन्म देनेवाली माताको धिक्कार ! तुम्हारे पिताको धिक्कार ! तुम आठ गीदड़ इकट्ठे होकर आये और सिंहसे विश्वासघात किया, तुमने सोये हुअे सिंहको धोखेसे पकड़ा, तुम्हारी जातिको धिक्कार है। मेरा अकेला जीव है और तुम्हारे साथ फौज है पर अेक बार ढीला छोड़ दो (बंधन खोल दो) तो फिर तुम्हें हाथ दिखाऊं, भैरोंसिंघने खूब सोचा ! मित्रता खूब निभायी ! मेरा अच्छा सत्कार किया ! खूब नारियल दिया ! (जँवाईको ससुरालसे जुहारीमें नारियल दिये जाते हैं) ! संसार भरमें नाम निकाल लिया ! खूब मुंह काला किया ! बहन-बहनोई तेरे क्या लगें ? तू दगाबाजीका साला है।

डूंगसिंघको पकड़कर उनने रथमें बैठा दिया और आगरेके लाल किलेमें पहुँचा दिया ... ऽ८नीका बड़ा साहब देखने आया। बोला—राघड़ बड़ा होशियार है, लस्ट

कंपनी सा' निरखणनै आयो, रांघड़ बडो हुंस्यार
भळभळ तो-माथो करै, नेणा जळै मुसाळ
इसड़ो रांघड़ अेक है, रे! जो होवै दो-च्यार
मार-मार फिरंग्यांनै कर दै कळकत्तेके पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पका पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी म्हारी हंदो म्हार
लाल किलैके मांयनै डूंग म्हार रख लेणा
हुकम नहीं छै काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूंतो चढ्यो जुझारसिंघ, गढ बठोठमें आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनूं सागै लायो
सैं होळीनै ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ
बोतल तो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तूं पी तूं पी' हो रही, काइ, करै घणी मनवार

जगमग कर रहा है, नेत्रोंमें मशालें जल रही हैं, अैसा राजपूत यह अेक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दें; यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता हैं; ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया! यह सिंहोंका सिंह है; इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुक्म नहीं है, नजरकैद कर देना।

(४)

जुझारसिंघ सीकरसे चढ़ा और बठोठके किलेमें आया। जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनोंको अपने साथ लाया। ठीक होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान होने लगा। बोतलें जगमग कर रही थीं, प्याले सजीव होकर पुकारते थे। 'तू पी, तू पी' इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे।

जब इसकी भनकार कानमें पड़ी तो रानी (डूंगजीकी पत्नी) महलसे बाहर निकली। उसने खड़े-ही-खड़े ताना दिया—तुम्हारे शराब पीनेको धिक्कार है! जिन्होंने

घड़घड़ चावै आंगळी, बो कड़कड़ चावै जाड़
नैण जगै ज्यूं दीवळा, ज्यांरी सवा हाथरी नाड़

जद यूं बोल्यो डूंगसिंघ, थे सुणल्यो फिरंग्यां ! वात
फिटफिट थांरी जामणवाळी, फिटफिट थांरो बाप
आठ गादड़ा मिल थे आया, कर्‌यो सिंघसूं घात
सूतै सिंघनै धोखै पकड़्यो फिटफिट थांरी जात
मेरी अकेली जान है, रे ! थांरै पलटण साथ
अेकर ढीलो छोड द्यो, थांनै फेर दिखाऊं हाथ
भैरूंसिंघनै भली विचारी, भलो निभायो मेळ
आछी करी जुंवारी मेरी, भलो दियो नारेळ
दुनियांमैं तैं नांव कढायो, मूंढो हुयग्यो काळो
भाण-भनेई कै लागै तूं दगावाजको साळो

डूंग न्हारनै पकड़कर वां पींजस दियो मिठाय
आगरैकै लाल किलैमैं दीनूं छै पुंचाय

लगा, कड़कड़ करता दाढ़ोंको चबाने लगा। उसके नेत्र अैसे जल उठे जैसे दीपक जल रहे हों। उसकी गर्दन सवा हाथ लम्बी थी।

तब डूंगसिंघ यों कहने लगा—हे फिरंगियो ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी जन्म देनेवाली माताको धिक्कार ! तुम्हारे पिताको धिक्कार ! तुम आठ गीदड़ इकट्ठे होकर आये और सिंहसे विश्वासघात किया, तुमने सोये हुअे सिंहको धोखेसे पकड़ा, तुम्हारी जातिको धिक्कार है। मेरा अकेला जीव है और तुम्हारे साथ फौज है पर अेक बार ढीला छोड़ दो (बंधन खोल दो) तो फिर तुम्हें हाथ दिखाऊं, भैरोंसिंघने खूब सोचा ! मित्रता खूब निभायी ! मेरा अच्छा [illegible] किया ! खूब [illegible] दिया ! (अैसोंको समझानेके लिये [illegible] दिये जाते हैं) ! [illegible] ! खूब [illegible] काला किया ! बहन बहनोईके [illegible] ! तू [illegible] है।

डूंगसिंघको पकड़कर [illegible] [illegible] दिया [illegible] [illegible]

चंदनो सा' निरखगनै आयो, रीघड़ वडो हुंस्यार
झगमग सो माथो करै, नैणा जळै मुसाळ
इसड़ो रीघड़ अेक है, रे ! जो होवै दो-च्यार
मार-मार फिरंग्यानै कर दे कळकत्तैके पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पका पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी म्हारां ईंदो म्हार
लाल किलैकै मायनै डूंग म्हार रख लेणा
हुकम नही छै काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूंतो चढ्यो जवारसिंघ, गढ बठोठमैं आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनूं सागै लायो
सैं होळीनैं ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ
बोतल सो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तूं पी तूं पी' हो रही, काइ, करै घणी मनवार

जगमग कर रहा है, नेत्रोंमें मशालें जल रही हैं, अैसा राजपूत यह अेक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दें; यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता हैं; ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया ! यह सिंहोंका सिंह है; इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुक्म नहीं है, नजरकैद कर देना ।

(४)

जुहारसिंघ सीकरसे चढ़ा और बठोठके किलेमें आया । जाट लोटिया और मीणा करणिया दो होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान सज कर..पुकारते थे । 'तू पी, तू पी'

राणी थायर नीसरी जद   कान पड़ी भणकार
ऊभी मसलो मारियो, थांरी   दारूमैं   धिरकार
क्यांनै बांधो सीस पागड़ी,   क्यांनै बांधो सूत ?
सागो काको पड्यो फैदमैं,   क्यों वाजो रजपूत ?

मत ना, अे राणी ! मसलो मारो,   मत ना काढो सेल
जैपर मिली, जोधपर मिलगी,   मिलगी बीकानेर
दोय पगांनै जागां कोनी,   भाई होग्या लैर

हाथांका हथियार सूंप दो,   चूड़ी लाखकी पैरो
धोती-जोड़ा इरा सूंप दो,   पगां घाघरी पैरो
पड़दै भीतर लुककर बैठो,   नैणां कजळो घाल
मेरे कंथकी बेड़ी काटूं   मैं तिरियाकी जात

ताजण लाग्या ताजणा स   मरदांकै खटक्या बोल
रजपूतांकै रंग चढ्यो स थै   टुळक्या कायर लोग
पांच पानको बीड़ो फेर्यो   जुझारसिंघ सरदार
कयां चढायो तेजरो,   कइयां-रै चढगी ताप

सिर पर पगड़ी बांधते हो ? किसलिअे सूत बांधते हो ? सगा काका फंदेमें पड़ा है, राजपूत क्यों कहलाते हो ?

जुझारसिंघने कहा—रानी ! ताना मत मारो, भाले जैसे चुभने बोल मत निकालो, हमारे विरुद्ध जयपुर मिल गया, जोधपुर मिल गया और मिल गया बीकानेर ! आज दो पैर रखनेको हमें स्थान नहीं मिलता ! भाई ही पीछे पड़े हैं ।

रानीने कहा—हाथोंके हथियार मुझे सौंप दो, तुम चूड़ियां पहन लो, ये धोती-जोड़े इधर दे दो, पैरोंमें लहंगा डाल लो, पर्देमें छिपकर बैठ जाओ, आंखोंमें काजल डाल लो, स्त्रीकी जात होकर भी मैं अपने पतिकी बेड़ी काटूंगी ।

ये कड़वे वचन वीरों को खटके मानो कोड़े लगे हों । वे जोशमें भर गये । राजपूतोंपर रंग चढ़ा । कायर लोग खिसक गये । सरदार जुझारसिंहने पांच पानोंका बीड़ा उठाया ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], सब [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] अेक लोटियै जाट

पक्को सेर [illegible] गेरू गाळो, करियो भगवाँ भेस
[illegible] मुजरो दो सन्तो आगां, राम राखसी टेक
आगारेकै [illegible] धूणियाँ, ज्यूं लंका , हडमान
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], मे [illegible] प्राण

(४)

आगारे-कै दंपत्री आगै धूणी घाली सात
इधर-उधर बळै बळीतो, बीच लोटियो जाट
मार पलाथी मींट लगाई, करै गजबका फैल
त्याग दियाऊ अन-जळ सारो, अेक भखै बस पून
आयै-गयैसूं मुख ना बोलै, अैसो धारी मून
छव महिनाकी लायी समाधी, खूब तप्यो दिन-रात
छटै महीनै लागतां अंग- रेजां बूझी बात

देखकर यहाँ लोगोंने निशाण खड़ा किया। यहाँ लोगोंके बुलावे चढ़ गया। सारे भाई-भतीजे मुकर गये, सब सरदार इनकार कर गये। निशाण न लेने पर बीड़ा लौट कर जाने लगा। उस लोटने हुअे बीडेको अकेले लोटिये जाटने उठा लिया।

(५)

उसने पक्का सेर भर गेरू गलाया और उससे वस्त्र रंगकर भगवाँ वेश बनाया। फिर दुशारसियको मुजरा करके वह आगरेकी ओर चल दिया। बोला—राम मेरी टेक रखेंगे। आगरेके कैदियोंके सामने उसने सात धूनियाँ जलायीं। इधर-उधर इन्धन जलने लगा। उनके बीचमें लोटिया जाट बैठ गया। पालथी मारकर आँखें बन्द कर लीं। गजबके फैल (आडम्बर) करने लगा। लोगोंको दिखानेके लिअे अन्न-जल भी छोड़ दिया, बस अेक पवनका भक्षण करता। अैसा मौन धारण किया कि किसी आने-जानेवालेसे मुंहसे नहीं बोलता। छै महीनोंकी समाधि लगायी। दिन-रात खूब ही तपा। छठे महीने के लगने पर अंग्रेजोंने बात पूछी—हे बाबाजी ! किस देशसे आये हो ! किस देशको

कुण देसां-हूँ आया, बाबाजी! कुण देसानै जाव?
पांच-पचीस थे लेल्यो, बाबा! धूणी परै हटाव
हुकम नहीं छै बडे सा'बका डबल कूच कर जाव

पांच-पचीस म्हे लेसो, बच्चा! ज्यारै है घर-बार
साधू भूखा भावका, म्हारै ना मायासूं काम
मांग्या खावां टूकड़ा म्हे रटां रामको नाम
आबूजी-हूं आया उतर म्हे, गंगा न्हावण जावां
थारै किलैमैं न्हार डूंगजी, वैरा दरसण पावां
खाय कायरी फिरंगी बोल्यो, सुणो, संतर्यां! वात
औ मोडा तो कपटी कोनी, नांय कपटकी घात
आं साधांको जिवड़ो भटकै, मेळो द्यो करवाय
डूंगसिंघ कंठीबंध चेलो, आनै देवो दिखाय
च्यार सिपाही आग होवो, च्यार सिपाही लार
जोरी-जपती करै मोड तो धरो कैदकै मांय

जा रहे हो? हे बाबा! पांच-पचीस रुपये ले लो और इस धूनीको परे हटाओ, बड़े साहबका हुकम नहीं है, बस डबल मार्च कर जाओ (जल्दीसे भाग जाओ)।

हे बच्चे! पांच-पचीस रुपये वह लेगा जिसके घर-द्वार हो; साधू भावके भूखे होते हैं; हमारे माया (धन) से कोई काम नहीं; हम मांगे हुअे टुकड़े खाते हैं और राम का नाम रटते हैं; हम आबू तीर्थसे उतरकर आये हैं, गंगा नहाने जाते हैं; तुम्हारे किलेमें डूंगसिंघ हैं, उसके दर्शन पावें, यही हमारी इच्छा है।

तब दया खाकर फिरंगी बोला—हे संतरियों! बात सुनो, ये साधू कपटी नहीं (जान पड़ते) हैं, कोई कपटकी घात नहीं है, इन साधुओंका जी डूंगसिंघको देखनेके लिअे भटक रहा है (व्याकुल है), इनका मिलन करवा दो; चार सिपाही आगे हो जाओ और चार सिपाही पीछे, यदि मोडे (साधु) जोर-जबर्दस्ती करें तो उठाकर कैदमें रख दो।

च्यार सिपाही आगा होगया, च्यार सिपाही लार
[illegible] करे किलेको मोज
फिर-फिर देखी [illegible] नहीं लगायी देर
[illegible] किलेको भेद
[illegible] मनमें भयो गुमान
[illegible] बैठ्या डूंग . सिरदार
[illegible] नैणां गळग्यो नीर
छाती भरी [illegible] छूट्यो डूंगको धीर

रंग है थारी मात, लोटिया! भलो जाटणी जायो!
आ मरणरी घड़ी बाजगी, भलो भेसनूं आयो
कंवरां माथे हाथ फेरज्यो, राणीने हिवळास
भाई-भतीजांने मुजरा कहज्यो, माजीने घणा सिलाम
जुहारसिंघने यूं समझायो घरकी करै संभाळ
जीवांगा तो फेर मिलांगा, ना दरगाके मांय

फिर चार सिपाही आगे हो गये और चार सिपाही पीछे। इस प्रकार लोटिया जाट और करणिया मीणा किलेकी भेद करने लगे। चहारदिवारीको फिर-फिरकर देख लिया, देर नहीं लगायी। फाटकों और खिड़कियोंको नजरमेंसे निकाल लिया। इस प्रकार किलेका सारा भेद ले लिया। जब कैदियोंकी बुर्जमें पहुँचे तो मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ। इधर-उधर मस्त बैठे थे। बीच सरदार डूंगसिंह था। डूंगसिंघने जब जाट (लोटिये) की सूरत पहचानी तो नेत्रोंसे आंसू बह चले, छाती भर आयी, हृदय उमड़ आया। इस प्रकार डूंगसिंघका धैर्य जाता रहा। वह बोला—अरे लोटिया! तुझे शाबाश! जाटनीने तुझे खूब जन्म दिया, यह मरनेकी घड़ी बज चुकी थी, तू खूब वेश बनाकर आया, कुंवरोंके माथे पर हाथ फेरना, रानीको धैर्य बंधाना, भाई-भतीजोंको मुजरा कहना, माताजीको बहुत-बहुत प्रणाम कहना, जुहारसिंहको यों समझाना कि घरकी देखभाल रखे, जीते रहे तो फिर मिलेंगे, नहीं तो बैकुण्ठमें मिलन होगा, जुहारसिंघको तुम चुपचाप यह खबर सुना देना कि सात दिनोंका हुक्म सुना दिया है, कालेपानी ले जायंगे।

-जुवारसिंघनै छाने सी थे दोज्यो खबर सुणाय
सात दिनांकी बोली दीनी, काळै पाणी ले जाय
कायर छातीका डूँगजी ! तूँ कायरता मत लाव्
सात दिनांकै भीतर थानै घर ले ज्याऊं छुडाय
बंध काटणको कस्या लोटियै डूंग न्हारहूं ठीक
धीर-धोबना बंधा डूंगनै ली आवणकी सीख

लाल किलै हूं नीसरतां बो ....
लोड्यो भाळै मोरचा कोइ करण्यो तकै सफील
आधी रात पहरको तड़को जोगयां धूणी, ठायी
भगवां ले जमनामैं फेंक्या तूंबा दिया तिरायी
असी रिप्यांमें लियो टोडड़ो हालया रातूँ-रात
गढ बठोठकै आया गोरवैं ऊगतड़ै परभात

लोटियेने उत्तर दिया—हे कायर छातीके डूंगसिंघ ! कायरता मत ला, सात दिनोंके भीतर-भीतर तुझे छुड़ाकर घर ले जाऊंगा। फिर लोटियेने डूंगसिंघसे बन्धन काटनेकी बात ठीक की और उसको धैर्य बंधाकर आनेके लिअे विदा ली।

लाल किलेसे निकलते हुअे उसने.........लोटिया मोरचे देख रहा था, फसीलकी चहारदीवारीको ताक रहा था। आधी रात बीतने पर, जब प्रातःकाल होनेको पहर भर रह गया था, जोगियोंने धूनी उठा दी। भगवे वस्त्रोंको लेकर यमुनामें फेंक दिया और तूंबोंको पानीमें तैरा दिया। असी रुपयोंमें अेक जवान ऊंट लिया और रातोंरात चल पड़े। प्रभात होते ही बठोठ गढ़के मैदानमें आ पहुंचे।

(गोरवैं= गायोंके बैठनेका मैदान, गाय की सीमा पर गाय को [illegible] ।

(६)

लोट्याँ लो मुजरा करया सबे   करगी राज-जुहार
साम्है उठकर मुजरो झेल्यो   ज्वारसिंघ सिरदार
तूं गयो, लोट्या! आगरै, स कोड़,   कहो सहरकी बात

के कहूं, म्हारा रावजी!, बाड़,   म्हांसूं कह्यो न जाय
डूंग म्हारनै देख'र आया   लाल किलेकै मांय
ईं जीनेसूं मरनो चोखो,   बुरो कैदको काम
हाथांमें तो पड़ी हथकड़ी,   पेड़ी पांवां मांय
गळैमें तोग-जंजीर पड़ी है,   बंद पींजरै मांय
सात दिनांकी चोल्यो लिख दी,   काळै पाणी ले ज्याय
मिलणो हो तो मिलो, रावजी!   फेर मिलणका नांय

इतणी बातां कहो कचेड़्यां,   गयो रावळा मांय
रांणी रोवण लागी सबे   रंग-महलकै मांय
कंवर रोवण लागया सबे   भरी कचेड़ी मांय

---

(६)

लोटियेने मुजरा किया और करगियेने राजसी जुहार। सरदार जवारसिंघने उठकर और सामने आकर मुजरेको स्वीकार किया और कहा—लोटिया! तू आगरे गया था, उस शहरकी बात कह। लोटियेने उत्तर दिया—हे मेरे रावजी! क्या कहूँ! मुझसे कहा नहीं जाता, हम डूंगसिंघको लाल-किलेमें देखकर आये हैं, कैदका काम बड़ा बुरा है, इस जीनेसे मरना अच्छा, हाथोंमें हथकड़ियां पड़ी हैं, पैरोंमें बेड़ी पड़ी हैं, गलेमें तौक और जंजीर पड़ी हैं, स्वयं पिंजड़ेमें बन्द हैं, सात दिनोंमें कालेपानी ले जानेका हुक्म लिख कर सुना दिया है, हे रावजी! मिलना हो तो मिल लो, फिर मिलनेके नहीं।

इतनी बातें कचहरीमें हुईं, वे उठकर रनिवासमें पहुँची। रंगमहलमें रानी रोने लगी। राजकुमार भरी कचहरीमें रोने लगे। उनको समझाया—रोवो मत, रुदन मत

मत रोवो, मत रुदन करो, फाइ, गत ना हुवो उदास
रात-रात परवाना भेजां भाई-भतीजां पास

सेखावत बीदावत चढिया, चढिया तंवर पंवार
मेड़तिया मेड़तिया चढिया, चढ्या नरूका साथ
च्यार ऊंट गुसांयांका चढिया, दादूपंथी साथ

झूठी-मूठी जान बणा लो, झूठो जानरो बीन
चुग-चुग करलां कूंचो गांडो, चुग-चुग घुड़लां जीण
आपां तो जानेती बणल्यां, बीन बणै भोपाळ
दोय जणा जांगड़िया बणकै सिंधू द्यो अरसाळ
हाथां-पगांकै बांधो डोरड़ा, सिर सोनाको मोड़
कानां घालो मामा-मुरकी, गळमें घालो गोय
लाल चौभणै मामा मोचा, लाल कनारी जोड़ो
लाल पाघड़ी, रातो वागो, रातै महियै घोड़ो

करो, उदास मत होओ, रात-ही-रातमें सब भाई-भतीजों (कुटुम्बियों) के प
लिखकर भेजते हैं (और डूंगजीको छुड़ानेके लिअे तय्यारी करते हैं)।

परवाने पाकर शेखावत और बीदावत चढ़े, तंवर और पंवार चढ़े, अे
चढ़े, साथमें नरूके चढ़े, गुसाइयोंके चार ऊंट भी चढ़े और साथमें दादूपंथ
फिर सबने सलाह की—झूठमूठ बरात बना लो, झूठा बरातका दूल्हा बना ले
ऊंटों पर जीन कसो, चुनचुनकर घोड़ों पर जीन रखो, हम लोग तो
भोपालसिंह दूल्हा बने, दो आदमी ढोली बनकर सिंधू राग आरम्भ
हाथों-पैरोंमें कांकन-डोरड़े बांधो, सिर पर सोनेका मौर रखो, कानोंमें
पहनाओ, गलेमें गोय डाल दो, लाल चमड़ेकी मामा-जूतियां पहना दो,
... दो, लाल जामा और लाल पगड़ी पहनाकर लाल मस्त ऊंट

हाथांका हथियार ले लिया, खाबाको सामान
जान बणाय'र चलया आगरै, हर राखैलो मान
रात-रात वै चलै जनेती, दिन ऊग्यां ठम जाय
आगरैकै तीन कोस पर डेरा दिया लगाय

(७)

जमनाजीकै बांवै-डांवै रेवड़ चरतो जाय
निजर पड़ी करण्यै मीणेकी, जद यूं बोल्यो आय
हुकम करो तो, सिरदारां! मैं मींढो ल्याऊं उठाय

हुकम चलै छै अंगरेजांको जोरी-जपती नांय
यो अंगरेजी राज है स थे जो ल्यावोला 'ठाय
बंध्या-बंध्या घोड़ा मर ज्यागा, बंध्या-बंध्या उमराव
गूजरकैनै राजी कर थे ल्यावो दोय'र च्यार

फिर उनने हाथोंमें हथियार ले लिये, खानेका सामान ले लिया और बरात बनाकर आगरेको चल दिये। भगवान प्रतिष्ठा रखेंगे। वे बराती रात-रातमें चलते और दिन ऊगते ही ठहर जाते। आगरेके तीन कोस दूर रहने पर उनने डेरे लगा दिये।

(७)

यमुनाकी बायीं ओर भेड़ोंका झुंड चरता जा रहा था। उस पर करणिये मीणेकी नजर पड़ी। तब वह आकर यों कहने लगा—हे सरदारों! हुक्म करो तो अेक भेड़ा उठा लाऊं। सरदारोंने कहा—यहां अंग्रेजोंका हुक्म चलता है, जोर-जबर्दस्ती नहीं हो सकती, यह अंग्रेजी राज्य है, यदि तुम उठाकर ले आओगे तो सरदार (कैदमें) बंधे-बंधे मर जायंगे और घोड़े यहां बंधे-बंधे. हां, अहीरके बेटेको राजी करके अेक नहीं दो-चार ले आओ।

स्यौसिंघजी, गूजरका बेटा ! कह मींढैको मोल
कितणा रिपिया द्यां मींढैका, वेगो मुखसूं बोल
कै मींढैको माजनो, स कोइ, कै मींढैकी जात ?
थे परदेसी पावणा, स कोइ, फिरो न दूजी वार
म्हांरो मोटो भाग छै स थे मींडो मांग्यो आय
मींडो थे ले ज्यावो, ठाकरां ! मिजमानीकै मांय
थे छो गूजर पालती, रे ! म्हे बाजां उमराव
संतमेंतमें मींडो खायां लाजै म्हांरो नांव
गूजर मांग्या पांच रिपइया, बीं पकड़ाया सात
गूजरकेनै राजी करकै मींडो लाया टाळ

दे झटको अर तोड़ खाजरू मुड़दो लियो बणाय
च्यार लाकड़ी तोड़कै, स कोइ, अरथी लयी बणाय
चाकर-चरवादारनै, स कोइ, भद्दर दिया कराय
गाजा-बाजा बंद कस्या, कोइ, लियो सोगको नांव

हे गूजरके बेटे शिवसिंघ ! मेढ़ेका मोल कह, मेढ़ेके कितने रुपये दें, जल्दी मुंहसे बोल । गूजरने उत्तर दिया—इस मेढ़ेकी क्या बिसात ? मेढ़ेकी क्या जाति ? तुम लोग परदेशी पाहुने हो, दुबारा नहीं आओगे, हमारा बड़ा भाग्य है कि तुमने आकर मेढ़ा मांगा, हे ठाकुरों ! मेढ़ा आप मेजबानीमें ले जाइये । करणियेने उत्तर दिया—तुम गूजर और प्रजा हो, हम सरदार कहलाते हैं, मुफ्तमें मेढ़ा खानेसे हमारा नाम लज्जित होगा । तब गूजरने पांच रुपये मांगे । उसने सात पकड़ाये । यों गूजरके बेटेको राजी करके अेक मेढ़ा चुनकर ले आये ।

मेढ़ेको झटका देकर और गर्दन तोड़कर मुर्दा बना लिया । फिर चार लकड़ियां तोड़कर अरथी बना ली । सब नौकरों-चाकरोंको भद्र करवा दिया (बाल मुंडवा दिये), गाजों-बाजोंको बन्द कर दिया और सोग (शोक) का नाम लिया (मातम करने लगे) । सरदार भेड़ासिंघ चार आदमियोंके कंधे पर चढ़ा । इस प्रकार आगे-आगे मुर्दा चला,

[illegible] सिरदार
[illegible] जनम-मरण
[illegible] पावनो [illegible]
[illegible]

[illegible] दाग
[illegible] दियो लगाय
[illegible] कंपनी बाग
[illegible] गुरजन कुतो लार
दूरी करी, हे जानेतां! थे मुड़दो दियो जळाय
मुड़दो-मुड़दो मत करो म दो सगळांको सिरदार
अबके मुड़दो कै दियो म तो बाजैगी तरवार
ऊंचे कुळको राजवी, धणी बावन गढांको राज
मामो बीनको मामो मरग्यो मेघासिंघ सरदार
जोरजी बीदावत बोल्यो, हुयो और-सूं-और
लालांको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसूं जोर

कंपनी पीछे चली। सबके आगे नालिया नाई पुकार देता हुआ चला। कंपनीके बागमें पहुँचकर उसने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चंदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-संस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुंएंकी राशि उठी, कंपनी-साहब चौंक उठा। वह निपुच्छे घोड़े पर चढ़ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा— हे बरातियों! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहां जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है; अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी! यह ऊंचे घरानेका राजवंशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेहासिंघ मर गया है। बीदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लालोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई बस नहीं!

स्याम कायरो फिरंगी बोलग्यो, नहीं मरेको बूंटी
तीन घड़ीको तीजो कर द्यो, बारा घड़ीरी बाटी
तेरा घड़ीको तेरो करके देवो घोड़ां काठी
तीन दिनांको करां तीसरो, बारा दिनकी बाटी
तेरा दिनको तेरो करके देस्यां घोड़ां काठी

फिरंगीसो पाछो फिरग्यो, मरोड़, करी न ज्यादा बात
नीव भरोसो, के करै, न काढ़, या रांघड़की जात

(८)

बाज्या ढोल, तासळा खड़क्या, चाल्यो ताजियां साथ
फिरंगी चढ़ग्यो ताजियां स मरदांका लाग्या हाथ

लोट्यै जाट करणिय मीणे माताजीन ध्यायी
दोय घड़ीकै मांयने बां नीसरणी रे लगायी
छंटड़ां-छंटड़ां कूद पड़्या बै लाल किलेके मांय
लैरां-लैरां वरी करणियो, आगे लोट्यो जाय
बोलै छै तो बोल, डूंगजी! देड़ां बेड़ी काट

तब फिरंगी कायरी खाकर बोला—मरेकी कोई दवा नहीं; तीन घड़ीका तीसरा कर दो, बारह घड़ीकी बाटी कर दो और तेरह घड़ीका तेरा करके घोड़ों पर जीन रखो (यहांसे चले जाओ)। सरदारोंने कहा—तीन दिनोंका तीसरा करेंगे, बारह दिनकी बाटी करेंगे और तेरह दिनकी तेरहीं करके घोड़ों पर जीन रखेंगे। फिरंगी यह सुनकर लौट गया, उसने अधिक बात नहीं की, यह रांघड़ (राजपूत) की जात है, भरोसा नहीं, क्या कर बैठे!

(८)

उधर ताजियोंकी सवारी निकली। ढोल बजे, तासे खड़के। फिरंगी चढ़कर ताजियों के साथ गया; इधर मर्दोंका दांव लगा। लोटिये जाट और करणिये मीणेने देवीका

बांयी बुरजमें बोल्यो डूंगजी, जाणे भड़क्यो न्हार
म्हारी बेड़ी काट्यां, लोटिया ! ना निसरैगो नांव
म्हारे बंधमें सित्तर बंधवा, वांकी पैली काट
कंकी रोवै बैन-भाणजी, कैंकी रोवै माय
बंधमें बैठ्यो कहै डूंगजी, सुण, रे लोट्या जाट !
पैला तो बंधवांकी काटो, पाछै म्हारी काट
कै जाणेगा सित्तर बंधवा, कै जाणेगा लोग
डूंग न्हार यो यूं भागो, ज्यूं नीकळ भागो चोर
बुरज तोड़कर बायर काढो बंधवा अेकै साथ
दो दिनमें मर ज्यावां, लोटिया ! दुनी करैगी बात

ज फिरंगीनै घेरो पड़ ज्या, पाछो यो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै बाडै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स बो बोल्यो कड़वा वैण
ईं मूंडेको धणी लोटिया ! म्हांनै आयो लेण ?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया ! तोपांको भै खाय
तेगो तेरो फरे म्यानमें पूठो घरनै जाय

ान किया और दो घड़ीके भीतर चहारदीवारी पर सीढ़ी लगा दी । फिर चुने-चुने वी
ाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था ।

इस प्रकार वे डूंगसिंह वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूंगजी
ोलता है तो बोल, बेड़ी काट दें । तब बायीं बुर्जमेंसे डूंगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा-
रे लोटिया ! मेरी बेड़ी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी
ं, उनकी बेड़ी पहले काट; किसीकी बहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मा रो रही है
किसीके छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है । कैदमें बैठा डूंगजी कहता है—
अरे लोटिया जाट ! सुन, पहले तो इन कैदियोंकी बेड़ी काट, पीछे मेरी काटना; नहीं
ो सत्तर कैदी क्या जानेंगे ? लोग भी क्या जानेंगे ? कहेंगे—सिंह जैसा डूंगजी
ैसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको एक

... सुणी जद लोट्यै
तन-मन लागी लाय
छिणी-हथोड़ा लेय लोटियो
पड्यो फड़कडी खाय
छिणियां तो छिणमिण चलै,
सपक हथोड़ा साय
अेक घड़ीमें काढ्या लोटियै
बंधवा पूरा साठ
सित्तर बंधवा काढिया जद
गया डूंगकै पास
अब के कौ छौ ? राव्रजी ! थारी
पूरण होगी आस ?
लोट्यै तोड़यो पींजरो, रे !
करण्यै काटी बेड़ो
हाथ पकड़ बायर कर्यो, फाड़.
यो बंधवांको हेड़ो
घोड़ी म्हारी उरी सौंप द्यो,
खांडो द्यो पकड़ाय
ढूंढ-ढूंढ मैं फिरंगी मारूं,
लेवूं बदळो काढ

साथ बाहर निकाल, हे लोटिया ! हम तो दो दिनमें मर जायंगे पर दुनिया बात करेगी।

लोटियेने उत्तर दिया—यदि फिरंगीको पता लग गया तो वह वापिस लौट आयगा, हमें तोपके मुंह पर चढ़ा देगा और तुम कैद-के-कैदमें रहोगे। इतनी बात सुनते ही डूंगजी बड़ी कड़वी बात बोल उठा—अरे लोटिया ! इस मुंहका धनी होकर (यह मुंह लेकर) तू मुझे छुड़ाने आया है ! लोटिया ! यदि तू मरनेसे डरता है, तोपोंसे भय खाता है, तो तेरी तलवार म्यानमें कर ले और उल्टा घरको चला जा !

जब लोटियेने यह बात सुनी तो उसके तनमें और मनमें आग-सी लग गयी। वह छिणी और हथोड़ा लेकर फड़कड़ी खाकर पड़ा (दांत कटकटाकर बेड़ी काटनेके काममें लग गया)। छिणियां छिनमिन शब्द करती चलने लगी, साथमें हथौड़े सटासट चलने लगे। अेक घड़ीमें लोटियेने पूरे साठ कैदियोंको निकाल बाहर किया। जब सत्तर कैदियोंको बाहर निकाल चुका तो डूंगजीके पास गया और बोला—हे राजजी ! अब क्या कहते हो ? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी या नहीं ? फिर लोटियेने पिंजरा तोड़ा और करणियेने बेड़ी काटी और कैदियोंके उस सिरेको हाथ पकड़कर बुर्जके बाहर कर दिया।

छूटते ही डूंगजी बोला—मेरी घोड़ी इधर दे दो, तलवार पकड़ा दो, मैं ढूंढ़-ढूंढ़ कर फिरंगियोंको मारूंगा और बदला निकाल लूंगा।

[illegible]
चोईस केदी [illegible], सीढ़ी तो गदी टूट
सीढ़ियां [illegible] दगो दियो अब, दरवाजैनै चालो
खूब करी ऐ केदियां [illegible], काम कर दियो काचो
[illegible], कोई-बरछी भाला
[illegible], [illegible]
रामदळ ज्यूं लंका तोड़ी, यूं दरवाजो तोड़ो

दरवाजैकै मूंडै आगै, अड़ी झाट-सूं-झाट
दरवाजेकी मोरी आगै, खूब चलै तरवार
तरवारांका उड़ै टुकड़ा, लड़ै लोटियो जाट
सेखावत बीदावत भूझै, लड़ै नरूका साथ
ओडलिया-मेड़तिया झगड़ं, झगड़ै तंवर-पंवार
लड़ै गुसांई दादू-पंथी, भलो चलावै वार
वालया नाई भाटा मारै, चाकर चरवादार
भलां-भलांका टूक उडावै, लड़ै डूंगजी ल्हार
लोटनो जाट करणियो मीणो, बध-बध बावै तरवार

सिर बेरीके आगे केदी हो गया और सब अेक साथ उठ कर चले। चौबीस केदी अेक साथ टूट पड़ जिससे सीढ़ी टूट गयी। तब बोले—सीढ़ीने तो धोखा दिया, अब दरवाजेकी ओर चलो। केदियो! तुमने खूब किया, काम बिगाड़ दिया; अब कोई छुरी-कटार और कोई बरछी-भाला ले लो, अेक साथ टूटो, कंधेसे कंधा भिड़ा दो; रामकी सेनाने जिस प्रकार लंकाको तोड़ा था उसी प्रकार दरवाजा तोड़ो।

दरवाजेके सामने झाट-से-झाट अड़ गयी। दरवाजेकी खिड़कीके सामने खूब तलवार चलने लगी। तलवारोंके टुकड़े उड़ने लगे। लोटिया जाट लड़ने लगा। शेखावत और बीदावत, और साथमें नरूके लड़ रहे थे। ओडलिये-मेड़तिये, तंवर और पंवार झगड़ रहे थे। गुसाई और दादूपंथी भी लड़ रहे थे। खूब चोटें कर रहे थे। वालिया नाई और नौकर-चाकर पत्थर फेंक रहे थे। सिंह जैसा डूंगजी लड़ रहा था जो अच्छे-अच्छों के

चोइस तो पुरबिया काट्या, सोळा चोकीदार
सित्तर तो काबलिया काट्या, ठारा मुगळ-पठाण
तोड़ आगरो बायर निकस्या, बोल्या जै-जैकार
राम-दवाई फिरी किलेमें, रोकणियो कोइ नांय

(९)

आगरैने पूठ देय बै चाल्या रातूँ-रात
बंधवांका तो पांव सूजग्या चाल्यो कोनी जाय
आगरैकै लाल किलैमें बात करी बां मोटी
असी कोसकै चढ्यै डूंगजी करी भुंत्राणे रोटी
फौजां तो बाटी करी स घोड़ांनै दीनी दाळ
झाफा पड़िया पातिया, स को, लाया सुसीका थाळ
लोटयो जाट करणियो मीणो बंधवांनै समझाय
म्हांरो फिरंगो छारो करसी आप-आपने जाय

टुकड़े करके उड़ा देता था। लोटिया जाट और करणिया मीणा बढ़-चढ़कर तलवार चला रहे थे। उनने चौबीस पूरबिये सिपाही, सोलह चौकीदार, सत्तर काबुली और अठारह मुगल तथा पठान काट डाले। इस प्रकार आगरेके किलेको तोड़कर बाहर निकल गये और जय-जयकार करने लगे। किलेके भीतर रामकी दुहाई फिर गयी, रोकनेवाला कोई नहीं रहा।

(९)

आगरेको छोड़ करके वे रातोंरात चले। बैलोंके पैर सूज गये। उनसे चला नहीं जाता था। आगरेके लालकिलेमें उनने बड़ी बात की। अस्सी कोस चढ़े हुये चलकर डूंगजीने भुरजेके गांवमें पहुंचकर रोटी की। फौजके लोगोंने बाटी बनायी और घोड़ोंको दाल दी। [illegible] पड़ी। झूलोंके पत्तल लगे। फिर लोटिये जाट और करणिये मीणेने बैलोंको समझाया—[illegible] अपने अपने घर जाओ।

सीकर-मांकर नीसरया, बां गारो रामगढ फेंट
च्यार तो चपड़ासी पकड्या, सोळा पकड्या सेठ
हाथ जोड़ सेठाण्यां बोली, राखो म्हां पर हेत
थे छो बेटा बदैसिंघका, म्हे छां ज्यांका सेठ
घोड़ांनै तो घास चरावां, थांनै चूरो-भात
गादी-गिंदवा देवां बैसणा, घणी करां मनवार

सेठाण्यांकी अरज सुणी जद सोळी पड़गी रीस
सेठांनै तो मुकत कर दिया गुन्हा कस्या बगसीस
कई दिनांका बिछड्या म्हे तो आवां बठोठके मांय
राणी ऊभो काग उडावै, परजा जोवै बाट

बठोठ पूंच्या डूंगजी थे दळ-बादळ छे साथ
राणी महलां ऊतरी स था भर मोत्यांको थाळ
आया पधारो, सायबा! थांनै मोत्यां लेवूं बधाय

---

(१०)

वे सीकरमेंसे होकर निकले और रामगढ़के अेक फेंट मारी। वहां चार सरकारी

म्हांनै मतां बधाव्रो, राणी ! बधाव्रो लोट्यो जाट
म्हे आपै नहिं आया, म्हांनैं ल्यायो लोटियो जाट

(११)

डूँग न्हार जोधाणै बैठो, ज्वारो बीकानेर
काकै-भतीजां मनमें रैगी लूँटणकी अजमेर

डूंगजीने कहा—हे रानी ! हमें मत बधाओ, लोटिये जाटको बधावो, हम अपने आप नहीं आये, हमें लोटिया जाट लाया है ।

(११)

फिर डूंगसिंह जोधपुरमें जा बैठा और जवारसिंह बीकानेरमें । चाचा और भतीजा दोनोंके मनमें अजमेर लूटनेकी इच्छा रह गयी ।

* *
*

राजस्थानी शब्दांरी जोड़णी *

१ तत्सम शब्द

१ संस्कृत तत्सम शब्दांरी जोड़णी मूळ मुजब करणी —

उदाहरण —पति गुरु कृपा दृष्टि नेत्र गोप यश अक्षर ॐकार ज्ञान।

२ संस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अकवचनरा रूपमें लेणा. आगे विसर्ग हुवै तो उ
छोड़ देणो—

उदा०—पिता माता दाता आत्मा राजा धनी स्वामी लक्ष्मी श्री मन यश

३ संस्कृतरा व्यंजनान्त शब्द स्वरान्त करने लेणा

उदा० – विद्वान धनवान जगत परिषद सम्राट अर्थात पश्चात किंचित।

विशेष—इसा शब्द समासमें पूर्वपद होयनै आवै तो मूल संस्कृत मुजब लिखणा—

उदा०—पश्चात्पद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर।

४ संस्कृत तत्सम शब्दांमें दो स्वरां वीचमें जको ड ल और व आवै उणनै ड़ ळ अ
व़ लिखणो—

उदा०—पीड़ा क्रीड़ा क्रीड़ा क्रोड़ ; जळ थळ काळ माळा बाळक निर्म
निर्मळ पाताळ ; पव़न भव़न प्रव़र कव़ि देव़ी देव़ेन्द्र तरुव़र सरोव़र

२ तद्भव शब्द

५ भाषामें तद्भव और तत्सम दोनूं रूप चालता हुवै तो दोनूं स्वीकार करणा—

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस।

६ तद्भव शब्दांमें ऋ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इता आखरांरो प्रयोग न
करणो—

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियांमें श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियां
अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो—

उदा०—आईशा।

---

* '[व्याकरण'री ओक परिशिष्ट।

७ तद्भव शब्दांरा अन्तमें आवै जिका ई और ऊ दीर्घ लिखणा—

उदा०—पाणी दही घी छारी नारी मणी कान्ती हरी लाडू लागू वाघू पाबू जसू साबू साधू गरू ।

पुराणी भासामें—राम-नूं (राम नै), जू (जो), सू (सो), किसूं (क्या) वगैरा आवै, इणानै राम-नुं, जु, सु, किसुं नहीं लिखणा ।

विशेष मणि कान्ति हरि साधु गुरु इत्यादि तत्सम शब्द हुवै जद छोटी इ और छोटा उ–सूं लिखणा ।

८ राजस्थानमें कठैई-कठैई आ-रो उच्चारण औ या ऑ या ओ जिसो हुवै, लिखणमें ओ उच्चारण नहीं दरसावणो, आ हीज लिखणो—

उदा०—कौम कॉम कोम नहीं लिखणो;

काम लिखणो ।

९ राजस्थानमें कठैई-कठैई शब्दरा अन्त में य श्रुति सुणीजै, लिखणमें उणनै नहीं दरसावणी—

उदा०—आलय लाय्र दो ल्यो ल्यावणो नहीं लिखणा ।

आल लाव्र दो लो लावणो लिखणा ।

१० तद्भव शब्दामें अनुप्राणित ह ध्वनि (= ह श्रुति) नै लिखणमें नहीं बतावणी; बतावणी हुवै तो लोपक-चिह्नरो प्रयोग करणो—

उदा०—न्हार प्होर म्हार कहाणी रहाव स्हारो व्होर वाल्हो बहैन साम्हो म्हाराज नहीं लिखणा ।

नार (ना'र) पोर (पो'र) मोर (मो'र) काणी (का'णी) साव, सारो (सा'रो) पोर बालो बैन सामो माराज (मा'राज) लिखणा ।

विशेष —म्हावणो, म्हारो, म्हाटो, इण शब्दामें ह श्रुति नहीं पण पूरी ह ध्वनि है इण वास्ते

११ तद्भव शब्दांरा अन्तमें अनुनासिक इ ध्वनि आवे और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवे तो इ ध्वनिने नहीं लिखणो, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जागां संधि हुवे तो ए और लिखा हुवे तो वृ कर देणो-

उदा०—ठा रा मा सी मं मे में ल्यो ह्यो पो मो लो।
चा चाय मा माय रा राय सा साय ।
दा दावणो वा वावणो दू दूवणो लू लूवणो
मे मेवणो ढो ढोवणो पो पोवणो मो मोवणो
सो सोवणो।

विशेष—नाइ कोइ इण शब्दामें इ श्रुति नहीं, पूरी इ ध्वनि है, इण वास्तै इणांने नाव्ो नहीं लिखणा।

१२ तद्भव शब्दामें इ श्रुतिसूं पूर्व अकार हुवे तो दोनाने मिलायने ऐ कर देणा—

उदा०—गहणो गैणो गहरो गैरो चहरो चैरो
जहर जैर कहर कैर सहर सैर
लहर लैर महर मैर नहर नैर
बहन बैन बहम बैम रहम रैम
सहणो सैणो कहणो कैणो वहणो वैणो
महणो मैणो रहणो रैणो लहणो लैणो
महल मैल मौल पहर पैर, पौर

१३ तद्भव शब्दामें अल्पप्राण और महाप्राणरो संयोग हुवे जद महाप्राणने दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अक्खर पक्ख जक्ख सक्ख भक्ख लक्ख; बध्ध पध्धड़; झुम्झ बुम्झ
तुम्झ सुम्झ मुम्झ; पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ; बफ्फ; सम्भ लम्भ
थम्भ दम्भ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो संयोग हुवे जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ; चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ; कड्ढ वड्ढ दड्ढ।

१४ बोलचालमें अल्पप्राण और महाप्राण दोनूं उच्चारण पायीजें जठ व्युत्पत्ति मुजब अल्पप्राण अथवा महाप्राण लिखणो

उदा०—समझणो (समज्झ), बांझ (वंझा), सांझ (संझा), जुझणो (जुज्झ), बुझणो (बुज्झ), सुझणो (सुज्झ), सीझणो (सिज्झ), बेझ (विज्झ); सेज (सेज्जा), तीज (तइज्जा), भीजणो (भिज्ज)

१५ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें जको व हुवै उणनै राजस्थानीमें व हीज लिखणो, हिंदी आली दाई ब नहीं लिखणो—

उदा०—वखाणनो, वंधणो, वंधावणो, वछड़ो, वटवो वटाऊ, वडो, वणनो, वणजारो, वडाई. वड़नो, वड, वतरणो, वधणो, वधावणो, वधाई, वधोतरी, वनात, वनो, वरतणो, वरमो, वरसात, वरस, वरात, वसणो, वही, वहू, वसेरो, वंस, वांको, वांस, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो, वार, वांस, वावड़ी, विकणो, विकरी, बिगड़नो विछड़नो, वीघ, वीकानेर, वीजळी, वींधणो, वीस (=२०), वुरो, वेचणो, वेझ, वेल. वेसी, वेस, वैरणो, वैरा वेंत, वैद, वैंम ।

१६ संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ही ब लिखणो—

उदा०—बाळक बाण बळ बूझणो बुद्धि ।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा०—द्वार—बार द्वितीया—बीज द्वितीयकः—बीजो ।

१८ प्राकृतमें व्व (संस्कृतमें र्व, व्य) हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा०—सर्व सव्व सब, सरब

पर्व पव्व परब

खर्व खव्व खड़ब

[illegible] [illegible] [illegible]

१४ बोलचालमें अल्पप्राण और महाप्राण दोनूं उच्चारण पायीजै जद व्युत्पत्ति मुजब अल्पप्राण अथवा महाप्राण लिखणो

उदा०—समझणो (समज्झ), वांझ (वंझा), सांझ (संझा), जूझणो (जुज्झ),
वूझणो (वुज्झ), सूझणो (सुज्झ), सीझणो (सिज्झ), वेझ (विज्झ ;
सेज (सेज्जा), तीज (तइज्जा), भीजणो (भिज्ज)

१५ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें जठै व हुवै उणनै राजस्थानीमें व हीज लिखणो, हिंदी आली दाई ब नहीं लिखणो—

उदा०—वखाणनो, वंधणो, वंधावणो, वछड़ो, वटवो वटाऊ, वडो,
वणनो, वणजारो, वडाई वड़ना, वड़, वतरणो, वधणो,
वधावणो, वधाई, वधोतरी, वनात, वनो, वरतणो, वरसो,
वरसात, वरस, वरात, वसणो, वही, वहू, वसेरो, वंस,
वांको, वांस, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो,
वार, वांस, वाड़ी, विकणो, विकरी, विगड़नो विछड़नो,
वीध, वीकानेर, वीजळी, वींधणो, वीस (=२०), वुरो,
वेचणो, वेम, वेल. वेसी, वेस, वैरणो, वेरा वेंत,
वैद, वैम ।

संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ही ब लिखणो—

उदा०—बाळक बाण बळ बूझणो बुद्धि ।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवै जठै राजस्थानीमें व लिखणो—

उदा०—द्वार—वार द्वितीया—वीज द्वितीयकः—वीजो ।

१८ प्राकृतमें व्व (संस्कृतमें र्व, द्र्य) हुवै जठै राजस्थानीमें व लिखणो—

उदा०—सर्व	सव्व	सव, सरव
पर्व	पव्व	परव
खर्व	खव्व	खड़व
गर्व	गव्व	गरव
द्रव्य	दव्व	दरव

राजस्थानी शब्दांरी जोड़णी

अंडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साड़ी
कुंडिआ	कूँडो	वाटिका	वाडिआ	वाड़ो
सुंड	सूँड	मुकुट	मउड	मोड़
मुंड	मूँडणो	कपाट	कवाड	किवाड़

२३ तद्भव शब्दांमें ड़ अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो—

उदा०—पड़नो जड़नो पड़नो बळनो गळनो तळनो जोड़नो सोड़नो जोड़नी गाळनी माळन।

३ व्याकरणरा रूप

२४ प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नहीं लिखणा—

उदा०—उदारता टाबरपणो गाडीआळो बागवान।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा—

उदा०—रामनै पोथीमें घरसूं मिनखरो।

२६ संयुक्त क्रियारा दोनूं अंशानै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा०—ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लियां फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढतो हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावो हो।

२७ समासरा शब्दांनै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमें योजकचिह्न (-) लिखणो—

उदा०—सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चंद्रशेखर, आवजाव; सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा—

२१ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ण्ण (संस्कृतमें ण्य र्ण ण्व न्य न्व न्न) हुवै जठे राजस्थानीमें न लिखणो तथा प्राकृतमें ण (संस्कृतमें ण, न) हुवै जठे राजस्थानीमें ण लिखणो—

उदा०—पुण्य पुण्ण पुन
वर्ण वण्ण वान
पर्ण पण्ण पान
कर्ण कण्ण कान
चूर्ण चुण्ण चून
जीर्णक जुण्णउ जूनो
अन्य अण्ण आन
धन्य धण्ण धन
शून्यक सुण्णउ सूनो
भिन्नक भिण्णउ भीनो
अन्न अण्ण अन
कृष्ण कण्ह कान
कसण किसन

क्षण खण खण
कण कण कण
जन जण जण
घनक घणउ घणो
भुवन भुवण भुवण
खनि खणि खाण
पुनि पुणि पुण
वन वण वण
कनक कणक कणक
भानु भाणू भाण
रजनी रयणी रैण
हानि हाणि हाण
नयन नयण नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि), पून (पवन), मून (मौन)।

विशेष—धन मन जन यन दान मान भवन पवन मुनि इत्यादि तत्सम श[ब्द]

तद्भव नहीं।

२२ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ड्ड या ण्ड हुवै जठे राजस्थानीमें ड लिखणो तथा प्रा[कृतमें ...]
हुवै जठे राजस्थानीमें ड़ लिखणो—

उदा०— वड्डउ वडो
कोड्ड कोड
लड्डु लाड
गड्डिआ गाडी
हड्ड हाड
अड्ड आड
गड्ड गाडणो

पीडा पीड़ा
भट भड़
तट तड़
प्रति पड़
पत्र पड़
कोटि कोड़ि
घोटक घोड़ो

४ लिपि

३३ अ झ ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा नहीं लिखणा --

३४ ॠ छ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नहीं लिखणा—

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक-चिह्न (') वापरणो—
उदा०—ना'र, सा'ब, का'णी।

३६ तद्भव शब्दांमें अै-औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा
उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इयांनै गैया कनैयो भैयो नहीं लिखणा।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अॅ-ऑ लिखणा—
उदा०—बॅन, रॅवॅला, ऑर।

३८ अॅ-रो देशी उच्चारण हुवै जद उणनै अ-यॅ नहीं दरसावणो—
उदा०—कॅवॅ है इणनै कवॅ ह नहीं लिखणो।

३९ र्+य नै पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणो, और जोर नहीं प
जद रय लिखणो –
उदा०—चर्य वर्य कार्य भार्या
चरयो वरयो वकारयो भारयो।

४० अनुस्वारनै वडी मींडीसूं और अनुनासिकनै छोटी मींडीसूं दरसावणो—
उदा०—हंस (पक्षी) दांत (दमन करयोड़ो)
हंसणो दांत

४१ तद्भव शब्दांमें अनुस्वाररी जगा पंचम अक्षर नहीं लिखणो—

२६ नै रै सैं आदि परसर्ग दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—रामनै, मोहनरै, घरसैं ।

३० साधित शब्दांमें धातु अथवा मूळ शब्दरा आदि स्वरनै प्रायःकर ह्रस्व लिखणो—

उदा०—मीठो　　मिठास,　　मिठाई

खाटो　　खटास,　　खटाई

खारो　　खरास

　　　　खारास

पूजा　　पुजारी

चीकणो　　चिकणास

ऊजळो　　उजळास

तोड़नो　　तोड़ाई　　तुड़ाई

अपवाद—ऊंचाई ऊंचाण नीचाण मौजीलो इत्यादि ।

३१ कई-अेक स्वरांत धातुवांरा वर्तमान-कृदंतमें धातुरो अंतिम स्वर सानुनासिक

लिखीजै—

उदा०—आंवतो जांवतो खांवतो सींवतो जींवतो सूंवतो पां

(=पियांवतो)। छांवतो वांवतो मांवतो भांवतो लींवतो पींवतो लूं

वैंवतो फैंवतो रंवतो संवतो ।

ई और ईजै प्रत्यय जोड़ता थकां स्वरान्त धातुरै आगै यकाररो आगम

उदा०—आ+ई=आयी　　आ+ईजै=आयीजै

जा+ई=गयी　　जा+ईजै=जायीजै

खा+ई=खायी　　खा+ईजै=खायीजै

दू+ई=दूयी　　दू+ईजै=दूयीजै

पो+ई=पोयी　　पो+ईजै=पोयीजै

वै+ई=वैयी　　वै+ईजै=वैयीजै

अप०—पी+ई=पी,　जी+ई=जी,　सी+ई=सी ।

अपभ्रंश भाषाके संधि-काव्य और उनकी परम्परा

[अगरचंद नाहटा]

(१) प्रारंभिक कथन

अपभ्रंश भाषा उत्तर-भारतकी बहुत-सी प्रमुख भाषाओंकी जननी है अतः इन भाषाओंके समुचित अध्ययनके लिये अपभ्रंशके सांगोपांग अध्ययनकी अत्यन्त आवश्यकता है। हर्षकी बात है कि कुछ वर्षोंसे विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और अपभ्रंश-साहित्यके अन्वेषण, अध्ययन अेवं प्रकाशन-का कार्य दिनोंदिन आगे बढ़ता जा रहा है। प्रोफेसर हीरालालजी जैनका अपभ्रंश भाषाका बहुत अच्छा अध्ययन है। इसी प्रकार पं० परमानन्दजीके अन्वेषणसे अनेक नवीन तथा अज्ञात अपभ्रंश ग्रन्थोंका पता लगा है। बहुत दिनों-से मेरी इच्छा थी कि अपभ्रंश साहित्य पर पूर्ण प्रकाश डालनेवाला इतिहास-ग्रंथ तय्यार किया जाय। दो-तीन वर्ष हुओ मैंने उक्त दोनों विद्वानोंको पत्र लिखकर अपभ्रंश साहित्यका इतिहास लिखनेका अनुरोध भी किया था। उत्तरमें प्रोफेसर साहबने सूचित किया कि उनने इस विषयमें अेक विस्तृत निबंध लिखकर नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशनार्थ भेजा है। पं० परमानन्दजीने लिखा कि वे अेक अैसा ग्रन्थ लिखनेकी तय्यारी कर रहे हैं। अतः मैंने विचार किया कि इन दोनों अधिकारी विद्वानोंकी कृतियां प्रकाशित होने पर ही मेरा कुछ लिखना उचित होगा और मैंने अपना इस संबंधका शोध-कार्य स्थगित कर दिया। इसी बीचमें शान्ति-निकेतनमें पं० हजारीप्रसाद द्विवेदीसे भेंट होने पर उनने अपभ्रंश साहित्य पर लिखनेके लिये स्नेहानुरोध किया परन्तु अपभ्रंश साहित्य दिगंबर जैन विद्वानोंका रचा हुआ ही अधिक है और मेरी ओर दिगंबर साहित्यकी कमी है अतः इस कार्यको हाथमें लेना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, फारसी, अंग्रेजी वगैरा विदेशी भाषावांरा शब्द तद्भव रूपमें स्वीकार करणा
उदा०—कागद, माळक, जमी, माळम, दसकत, मसीत, मजूर, सीसी, सामल; अगस्त, सितंबर, बंक, करंट, रपट, रपोट, दरजण, लालटेण, छुलैण, टिगट, लाट, गिलास।

४३ विदेशी भाषावांरा शब्द वापरतां उण भाषावांरा विशिष्ट उच्चारण दरसावण वास्तै चिह्न नहीं वापरणा—

उदा०—अगस्त लिखणो ऑगस्ट नहीं लिखणो
काळेज लिखणो कॉलिज् नहीं "
नजर लिखणो नज़र " "
दफतर " दफ़्तर " "
मुगल " मुग़ल " "
खबर " ख़बर " "
फरक " फ़र्क़ " "
मालम " मअ़लूम " "
इलम " इ़ल्म, अि़ल्म "

मुनिजीका अनुमान सही निकला। अपने संग्रहकी सूचीको ध्यानसे देखने पर उसमें बहुत बड़ी संख्यामें संधि-काव्य प्राप्त हुओ। अपभ्रंशके संधि-काव्योंके साथ-साथ अठारह-बीस परवर्त्ती संधिकाव्य भाषाके भी उपलब्ध हुओ। इनके अतिरिक्त बीकानेरके वृहद् ज्ञानभंडार आदि अन्यान्य संग्रहोंमें भी संधिकाव्योंकी अनेक प्रतियाँ विद्यमान हैं जिनमेंसे कई ओक नवीन भी हैं।

(२) संधि नामका अर्थ

अपभ्रंशमें संधि शब्द संस्कृतके सर्ग या अध्यायके अर्थमें आता है। आचार्य हेमचन्द्र लिखते हैं—

पद्यं प्रायः संस्कृत-प्राकृताऽपभ्रंश-ग्राम्य-भाषा-निबद्ध-भिन्नान्त्यवृत्त-सर्गाऽऽश्वास-संध्यवस्कंधक-बंधं सत्संधि शब्दार्थ-वैचित्र्योपेतं महाकाव्यम्।

इससे जान पड़ता है कि संस्कृतके महाकाव्य सर्गोंमें, प्राकृतके महाकाव्य आश्वासोंमें, अपभ्रंशके महाकाव्य संधियोंमें, और ग्राम्यभाषाके महाकाव्य अवस्कंधोंमें विभक्त होते थे। परवर्त्ती कवियोंने ओक संधिवाले खंडकाव्योंको संधिकाव्य नाम दिया।

महाकाव्यका प्रत्येक संधि अनेक कड़वकोंमें विभक्त होता था। इन संधिकाव्यों-मेंसे कई कड़वकोंमें विभक्त हैं, कई नहीं हैं।

(३) अपभ्रंशके संधि-काव्य

हमारी शोधसे अभी तक नीचे लिखे अपभ्रंशके संधिकाव्योंका पता चला है—

(१) अनाथि-संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ सूरि

समय—संवत १२९७ के लगभग।

कथावस्तुके लिओ उत्तराध्ययन सूत्र देखना चाहिओ।

आदि—जस्स पभावि माहप्पा परमप्पा पाविओ महं हुंत
तं तित्थं सुरसत्थं जयइ जगे वीर-जिण-पहुणो

विसओहि विनडिय कसाय-पराडिय हा भमाडु तिहुयण संभइ
जो अप्पं जाणइ सम-सुहु माणइ अप्पारामि सु अभिरमइ

सोमरके लेख भी पढ़नेमें आये। इनसे पुराने विचारको नवीन प्रेरणा मिली और इस विषयमें शोधका कार्य आरम्भ किया जिसके फल-स्वरूप पांच-सात निबंध लिखे गये जिनको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करनेका श्रीगणेश इस निबंध द्वारा किया जा रहा है।

पं० परमानन्दजी इस विषयमें क्या नवीन जानकारी देते हैं यह जानना अभी शेष है अतः अभी मैं उन्हीं बातों पर प्रकाश डालूँगा जिनके सम्बन्धमें इन दोनों दिगंबर विद्वानोंकी जानकारी बहुत सीमित होगी, अर्थात श्वेताम्बर विद्वानोंके रचे हुअे साहित्य पर। यदि समय और संयोगोंने साथ दिया तो विशेष विचार भविष्यमें किया जायगा।

अपभ्रंश-साहित्यकी चर्चा करते समय श्वेताम्बर विद्वानोंकी अपभ्रंश साहित्यकी महान सेवाको भुलाया नहीं जा सकता। जिस प्रकार दिगंबर ग्रन्थ-कारोंने अपभ्रंशके बड़े-बड़े महाकाव्य लिखे हैं उसी प्रकार श्वेताम्बर विद्वानोंने विविध नामों और प्रकारों वाले लघु काव्य लिखनेमें कौशलका परिचय दिया है। परवर्ती श्वेतांबर साहित्यकारोंको अपभ्रंशके इस लघु-काव्य-साहित्यसे बड़ी भारी प्रेरणा मिली जिससे उनने इन विविध परंपराओंको अक्षुण्ण ही नहीं रखा किन्तु वे उन्हें विकसित करने और नये-नये अनेक रूप देनेमें समर्थ हुअे। संधिकाव्यकी परंपरा भी अेक अैसी ही परंपरा है और उसीके विषयमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न इस निबंधमें किया जा रहा है।

प्रस्तुत लेखके लिखनेकी प्रेरणा मुनि श्री जिनविजयजीके अेक पत्रसे मिली जिसमें उनने लिखा था—

मेरी अेक विद्यार्थिनी, जो Ph. D. का अभ्यास कर रही है, वह कुछ अपभ्रंश आदिकी संधियों, जैसे आनन्द संधि, भावना संधि, केशी-गोयम-संधि इत्यादि प्रकारके जो संधि-प्रकरण हैं, उनका अेक संग्रह कर रही है और संधिके स्वरूप आदिके विषयमें शोध कर रही है। अभी उसने जिक्र किया और आपको पत्र लिखने बैठा। इससे स्फुरित हुआ कि आपके पास अैसी बहुत-सी कृतियां होंगी। अगर हों तो भेज दें ताकि उसका अच्छा उपयोग होगा। चंदनबाला-संधि, सुबाहु-संधि आदि जैसे अनेक प्रकरण हैं। पाटण भंडारमें कुछ प्रतियां हैं। उनको भी यथावकाश प्राप्त करनेका प्रयत्न करूंगा। पर इससे पहले आपके पाससे ज्यादा सुलभताके साथ मिल सकेंगी अैसी आशासे आपको लिख रहा हूं।

अंत—जेमा मदा-मईओ संघो मणोव , मंजम-निवस्स
सं नमि-निवरिसग्गा सह ससका गौर संजोगो ॥२॥
बारह-सत्तासइओ वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिओ
गिरि-मंप-पट्टणओ अयं लिहियं सुआभिहियं ॥३॥
मयणरेहा-संधि समाप्तः ॥

४ वज्रस्वामि-संधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)
आदि—अह जग निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ
अंत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ।
साहिज्जइ भावि मुच्चइ पावि जि तिहयणु निय-गुण-भरिउ ॥६६॥
चरिउ मुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणारु सो लहु पावइ परम पउ।
वइरसामि-संधिः समाप्तः ॥

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ
आदि—
पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१॥
इह अत्थि गामु भव-वास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह बहु-रोग-सोग-दुह जोग-गेह ॥२॥
अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अह दुसंधिहि चिंतणु जाणु भविय ! तिम ॥१८॥
इति अंतरंग-संधिः समाप्तः। इति नवमोधिकारः ॥

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

र्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य
मय—संवत १३२८
ादि—
अज्ज वि जस्स पहावा विय़लिय-पावा. य ऊवलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थं नंदउ भव—जलहि—वोहित्थं ॥१॥

रायगिहि नयरि सेणीउ राउ गुरुभत्ति निवेसिय वीयराउ
सो अन्न-दिवसि उज्जाणि पत्तु मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-गत्तु
अंत— पाउ चउ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पत्त पाहेउ
सीलंग-रहारूढो जिणपह पहिओ सया सुहिओ
अणाथिया-संधि ॥ कडव ॥२॥

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स वहाणज्जवि तव-सिरि-समलंकिया जिया हुंति
सो णिच्चं वि अणग्घो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहि जगडिय विसयहिं विनडिय
तिक्ख-दुक्ख-खंडिय खंडियहं चिरु।
संसार-विरत्तहं पसमिय-चित्तहं
सत्तहं देमि गुसट्ठि निरु ॥२॥

अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
भाविहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणासु तरिहिं
भवियण भव-सायरु तरहु ॥३१८॥
जीवानुशास्ति-संधिः समाप्तः

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ५

कर्त्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुद्धा ६

आदि—निरुवम-नाण-निहाणो पसम-पहाणो विवेय-सनिहाणो
दुग्गइ-दार-पिहाणो जिन-धम्मो जयइ सुह-कामा ॥१॥
सुमरिवि जिन-सासणु सुह-निहि-सासणु
सिरि-नमि-महरिसि मनि धरिव
पभणिसु संखेविहि मयणरेह-महासइ-चरिव ॥२॥

पणमवि पणइंदह वीर जिणंदह चरण कमलु सिवलच्छि कुलु
सिरि-नमयासुंदरि-गुण-जळ-सुरसरि किंपि थुणिवि लिउ जंम-फलु ॥२॥
सिरि-वद्धमाणु पुरु अत्थि नयरु तहिं संपइ नरवइ धम्म-पवरु
तहिं वसइ सु-सावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाह वयणु ॥३॥
तब्भज्ज-वीरमइ-कुक्खि-जाय दो पवर पुत्त तह इक्क धूअ ।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४॥

अंत—तेरस-सय-अट्ठवीसे-वरिसे सिरि-जिणपहुप्पसाएण
एसा संधी विहिया जिणिंद-वयणाणुसारेणं ॥७१॥
श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अवंति-सुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडव २, गाथा १३+८

आदि—मढ विहार पायारह सोहिउ
वर मंदिर पवर पुर अमरनाहु पिक्खवि मोहिउ
इय एरिसु पाडलिय पुरु जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु जिय-सत्तु तहिं नंदु महाबलु राउ ॥१॥

अंत—कोवि णिय-तणु तविण सोसइ कुवि अरंन वण निवसए
पिय कोवि किर सेवालु भक्खइ सोवि तुय आसंकए
जो वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस-भोयण-सित्तउ
तसु थूलभद्द व्व (६) पायए णमउं जिणि मयण तुहुं जित्तउ

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाएं पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इनका विवरण बड़ौदाके गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंके सूची-पत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींसे लिये गये हैं। इस सूचीपत्रमें पृष्ठ ६८ पर अनाथि संधि और जीवानुशास्ति संधि नामक दो और संधियोंके उल्लेख हैं, परन्तु उनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया जा सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

नाम	गाथा	कर्ता	संवत्	प्राप्ति-स्थान
[illegible] संधि	...	[illegible]	[illegible] लगभग	जैन गुर्जर कविओ
[illegible] संधि	गाथा [illegible]	"	[illegible]	"
" "	...	[illegible]	[illegible]	"
८ [illegible] संधि	गाथा [illegible]	[illegible]	[illegible] लगभग	हमारे संग्रहमें

सत्रहवीं शताब्दी

नाम	गाथा	कर्ता	संवत्	प्राप्ति-स्थान
९ [illegible] संधि	...	[illegible]	१६०४	जयपुर भंडार
१० [illegible] संधि		पुण्यसागर	१६०४	हमारे संग्रहमें
११ [illegible] संधि	गाथा १०६	गुणप्रभसूरि	१६(०)८	आश्विन वदि ६ गुरु जेसलमेरमें रचित
१२ [illegible] संधि	...	नयरंग	१६२१	जेसलमेर भंडार
१३ जिनपालित-जिनरक्षित संधि	...	गुणप्रभ	१६२१	बृहद् ज्ञानभंडार
१४ हरिकेशी संधि	...	कनकसोम	१६४०	"
१५ संयति संधि	गाथा १०६	गुणराज	१६३०	हमारे संग्रहमें
१६ गजसुकमाल संधि	गाथा ३४	मूलावाचक	१६२४	जैन गुर्जर कविओ
१७ चतुःशरण प्रकीर्णक संधि	गाथा ६१	चारित्रसिंह	१६३१	जेसलमेर भंडार
१८ भावना संधि	...	जयसोम	१६४६	हमारे संग्रहमें
१९ अनाथी संधि	...	विमल विनय	१६४७	"
२० रूपवन्ना संधि	...	गुणविनय	१६५१	बृहद् ज्ञानभंडार
२१ नंदिषेण संधि	...	दानविनय	१६६५	हमारे संग्रहमें
२२ मृगपुत्र संधि	...	सुमतिकल्लोल	१६६३	बृहद् ज्ञानभंडार
२३ आनंद संधि	...	श्रीसार	१६८४	जेसलमेर भंडार
२४ केशी गौतम संधि	...	नयरंग	१७वीं शताब्दी	हमारे संग्रहमें
२५ नमि संधि	गाथा ६६	विनय (समुद्र)	"	बृहद् ज्ञानभंडार
२६ महाश्रावक संधि	...	धर्मप्रबोध	"	हमारे संग्रहमें

अठारहवीं शताब्दी

नाम	गाथा	कर्ता	संवत्	प्राप्ति-स्थान
२७ कंडरीक पुंडरीक संधि	...	राजसार	१७०३	जेसलमेर भंडार

पय नमीय सीसइं तासु सीसइ असे संधी विनिम्मिआ
सिव सुक्ख कारण दुह निवारण तव उवअेसिइ वम्मिआ

लेखनकाल—सं० १५०५

प्राप्ति-स्थान—पाटणका भंडार

(१२) उपदेश-संधि

विस्तार—गाथा १४

कर्त्ता—हेमसार

अंत—उवअेस संधि निरमल बंधि हेमसार इम रिसि करअे
जो पढइ पढावइ सुह मणि भावइ वसुहं सिद्धि वृद्धि लहअे

(१३) चउरंग-संधि

विस्तार—कडवक ५

विषय—चार शरणोंका वर्णन

विशेष विवरण—पिछली तीन कृतियोंका उल्लेख जैन गुर्जर कविओ, भाग १, में पृष्ठ ७६ और ८३ पर हुआ है। नंबर ११ और १२ की भाषा अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

(४) अपभ्रंशोत्तर राजस्थानी आदि भाषाओंके संधिकाव्य

अपभ्रंशकी संधिकाव्योंकी परंपराको भाषा-कवियोंने चालु रखी। हमारी शोधसे कोई ४० असी रचनाओंका पता लगा है जिनकी नामावली आगे दी जाती है। ये चौदहवींसे लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तककी हैं।

चौदहवीं शताब्दी

१ आनंद-संधि	गाथा ७५	विनयचंद्र	...	हमारे संग्रहमें
२ गौतम संधि	गाथा ७०	...	...	"

सोलहवीं शताब्दी

३ मृगापुत्र संधि	...	कल्याण
४ नंदन मणिहार संधि	...	चारचंद्र

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

२८ जयंती संधि	...	अभयसोम	१७२१ भाद्र	हमारे संग्रहमें
२६ भद्रनंद संधि	...	राजलाभ	१७२३	श्रीपूज्यजीका दफ्तर
३० प्रदेशी संधि	...	कनकविलास	१७२५	हमारे संग्रहमें
३१ हरिकेशी संधि	...	सुमतिरंग	१७२७	...
३२ चित्रसंभूतिसंधि	गाथा ३६	नयप्रमोद	१७२६	वृहद् ज्ञानभंडार
३३ चित्रसंभूति संधि	गाथा १०६	गुणप्रभसूरि	१७२६	जेसलमेर भंडार
३४ इषुकार संधि	...	खेमो	१७४५	हमारे संग्रहमें
३५ अनाथी संधि	...	"	"	"
३६ थावच्चासंधि	...	श्रीदेव	१७४६	वृहद् ज्ञानभंडार
३७ भरत संधि	...	वे० पद्मचंद्र	१८ वीं शताब्दी	जेसलमेर भंडार
३८ मृगापुत्रसंधि	...	जिनहर्ष	"	...
		उन्नीसवीं शताब्दी		
३६ प्रदेशी संधि	...	जेमल	१८१७	हमारे संग्रहमें
		अज्ञात-काल		
४० चन्दनबाला संधि ...		...	...	(जिनविजयजीके पत्रमें उल्लेख)
४१ जिनपालित-जिनरक्षित संधि	...	मुनिशील	...	वृहद् ज्ञानभंडार
४२ सुबाहु संधि	...	मेघराज	..	लींबड़ी भंडार

कथन होगा उसी भावका कथन बाकीके दोहलोंमें भी भंग्यन्तरसे किया जायगा। कवि साधारण हुआ तो आगेके दोहलोंमें शब्दान्तर paraphrase सा करता जायगा और यदि प्रतिभाशाली हुआ तो भावको अैसे अनोखे ढंगसे, वक्रताके साथ, दुहरायगा कि पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होगी।

गीतको आप अेक कविता समझ लीजिये। जैसे अेक कवितामें अनेक पद्य होते हैं वैसे ही अेक गीतमें कई दोहले होते हैं। अधिकांश गीतोंमें चार दोहले पाये जाते हैं पर कम या बेसी भी हो सकते हैं। हां, तीनसे कम दोहले किसी गीतमें नहीं होते।

दोहलेमें प्रायः चार चरण होते हैं। अेक गीतके सब दोहले समान होते हैं पर कुछ गीतोंमें प्रथम दोहलेके प्रथम चरणमें दो या तीन मात्राअें या वर्ण अधिक होते हैं जो मानो गीतका आरंभ सूचित करते हैं।

आगे कुछ वीर-गीत दिये जाते हैं। पहले गीतमें वीरकी प्रशंसा है। आगेके पांच गीत राजस्थानके तीन प्रख्यात वीर राठौड़ अमरसिंह, राठौड़ बलू और चौहान केसरीसिंह-से सम्बन्ध रखते हैं।

राठौड़ अमरसिंह जोधपुरके महाराजा गजसिंहका पुत्र और महाराजा जसवंतसिंहका बड़ा भाई था। वह अपनी प्रचंड निर्भीकता और उद्दंड साहसके लिअे भारत भरमें प्रसिद्ध है। उसने बादशाह शाहजहांके भरे दरबारमें मीरमुंशी सलाबतखानको कटारसे मार डाला, और अनेक योधाओंके साथ अकेला लड़ता हुआ मारा गया। उसकी प्रशंसामें राजस्थानी और हिन्दीके अनेक कवियोंने काव्य-रचना की है। उसके सबधमें यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

> उण मुखम् गग्गो कह्यो इण कर लयी कटार
> वार कहण पायो नहीं होगी जमधर पार

बलू अमरसिंहका सरदार था। अपने उद्दंड स्वभावके कारण अमरसिंहने बलूको निकाल दिया। यह बादशाहके पास पहुँचा और बादशाहसे नयी जागीर प्राप्त की। जब अमरसिंह मारा गया तो अमरसिंहकी रानियोंने सती होनेके लिअे अमरसिंहका शव मांगा। बलूने शव लानेका बीड़ा उठाया और शाही सेनासे जा भिड़ा।

किसनदास (कविताका नाम केसरीसिंह) साचोरा चौहान अमरसिंहका पुत्र था। साचोरा चौहान अपनी वीरताके लिअे बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। उसके संबंधमें कवियोंने जो गीत लिखे हैं वे राजस्थानीके सर्वश्रेष्ठ गीतोंमेंसे हैं।

१—चारणी गीत

राजस्थानी साहित्यमें गीत-साहित्यका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तविक डिंगल साहित्य इन गीत-साहित्यको ही कहना चाहिये। डिंगलका पूर्ण ज्ञान इन गीतोंके अध्ययनके बिना असम्भव है।

गीत-साहित्य राजस्थानी भाषाकी अपनी विशेषता है। हिन्दी, पंजाबी, सिंधी, गुजराती आदि पड़ोसी भाषाओंमें इसका नितान्त अभाव है।

गीत-साहित्य प्रधानतया वीर रसात्मक, और ऐतिहासिक विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाला है, यद्यपि ऐसे भी किसी पर भक्ति-शृंगारके गीत लिखे गये हैं। अधिकांश गीत चारणोंकी कृतियां हैं पर अन्यान्य जातियोंके लिखे हुअे गीत भी बहुत मिलते हैं।

गीतोंकी संख्या हजारों है। राजस्थानमें कदाचित ही कोई अैसा वीर हुआ होगा जिसकी वीरतापर अेकाध गीत न बना हो। हजारों वीरोंकी स्मृतिको इन गीतोंने जीवित रखा है जिनको इतिहासने भी भुला दिया है।

गीत-साहित्यमें सबसे महत्त्वपूर्ण वीर-गीत हैं। ये वीर-रसकी उमड़ती हुई धारायें हैं। महाराणा प्रताप, दुर्गादास, अमरसिंह राठौड़ आदिके गीत रसात्मक साहित्यकी अमूल्य निधि हैं।

ध्यान रहना चाहिअे कि ये गीत यद्यपि गीत कहे जाते हैं, गाये नहीं जाते थे। ये गानेकी चीजें नहीं हैं। बाहरी लोग गीत नाम देखकर इन्हें गानेकी चीज समझ लेते हैं और इनके रचयिताओंको साधारण गायक कह देते हैं। चारण लोग गायक कहे जानेको अपना अपमान समझते हैं। गीत राजस्थानी छंद-शास्त्रकी अेक पारिभाषिक संज्ञा है।

ये गीत अेक विशेष लयसे पढ़े जाते थे, रिसाइट recite किये जाते थे। पढ़नेकी यह शैली बड़ी भव्य और प्रभावशाली होती थी। उस शैलीमें पढ़े जाते हुअे गीतोंसे वीर लोग हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर कर देते थे। वैसी भव्य शैलीमें पढ़नेवाले चारण आज भी कहीं-कहीं मिल जाते हैं। वे विरल हैं पर उनका नितान्त अभाव नहीं।

इन गीतोंकी अेक विशेषता विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वह यह कि अेक गीतके सभी दोहलोंमें प्रायः वही भाव बारबार लाया जाता है ...

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघौतरो

गढपतियाँ घणां किया गढ-रोहा
परगह ले जूभिया पह।
जिग कीधौ अमरेस जडाळो
किणहि न कीधौ इम कळह ॥ १ ॥

कोटां ओट घणां जुध कीया
फौजां घणां किया फर-फेर।
राव राठौड़ जिहीं सूं-रोढ़ां
नरपति बिढियो न-को अनेर ॥ २ ॥

कोटां प्राण प्राण के कटकां
सूं पहरिया दिली-पतिसाह।
अेक कटारी कियो न अेकण
गजसिंघौत जिसो गज-गाह ॥ ३ ॥

दाणव बि-न्निण घणां तळ दीधा
अणिये मरण दिखाळियो धाढ।
बाहो अेकण गंग-वंसोधर
जम-दाढां मांही जम-दाढ ॥ ४ ॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइयां (!) कीं। पर राठौड़ वीर राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, और अकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ [illegible] यवनोंको देखते नीचे ढहा दिया। मरण आ पहुँचने पर मारवाड़को [illegible]। [illegible] बादशाहके सामने राठौड़ वीरने अकेले कटारी चलाई।

(१)

वीर-वर्णन

कहै कंथनूं दुहूं कुळ ऊजळी कामणी
   बळां फौजां भिळै, लाग बागै।
नानती तिकानूं जिकै भड़ नीसरै,
   लारला वंसनूं गाळ लागै॥ १॥

सूरमा जिके रजपूत आव्रध सजै
   लोह भिळत्रै मनां सु-जस लोभा।
कनक-आभूखणां सोहणै कामणी
   सूर आभूखणां घाव्र सोभा॥ २॥

साम-रा कामनूं धसै दळ सामुहा
   केव्रियां पछाड़ण फतै करणै।
साथता रह्यां निज सु-जस काने सुणै
   प्राण छूटां पछै सती परणै॥ ३॥

---

१ पीहर और ससुराल इन दोनों कुलोंमें उज्ज्वल (यशस्विनी) कामिनी पतिसे कहती है—वीर वे हैं जो अपने बलसे शत्रु-सेनाओंको विध्वस्त करते हैं और तलवार बजाते हैं। जो योधा अैसे समयमें भाग निकलते हैं उनको लानत है। अैसा करनेसे पिछले वंशको (पूर्वजोंको) कलंक लगता है। (नानती=लानत, या लघुता)।

२ शूर क्षत्रिय वे हैं जो मनमें सु-यशकी लालसासे शस्त्र सजकर लोहा बजाते हैं। स्त्री सुवर्णके गहनोंसे शोभा देती है; शूरोंकी शोभा घावोंके गहनोंसे है।

३ सच्चे शूर स्वामीके कार्यके निमित्त शत्रुओंको पछाड़ने और विजय प्राप्त करनेके लिअे शत्रु-सेनाके सम्मुख आगे बढ़ते हैं। जीवित रहने पर अपने कानोंसे अपना सु-यश सुनते हैं और मर जाते हैं तो पीछे सतीसे विवाह करते हैं (उनके मरने पर उनकी स्त्रियां सती होती हैं जो स्वर्गलोकमें उनसे आ मिलती हैं)।

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघोतरो

गढपतिये घणां किया गढ-रोहा
परगह के झूझिया पह।
जिम कीधो अमरेस जडाळी
किणहि न कीधो इम कळह ॥ १ ॥

कोटां ओट घणां जुध कीया
फौजां घणां किया फर-फेर।
राव राठौड़ जिहीं सूं-रौद्रां
नरपति बिढियो न-को अनेर ॥ २ ॥

कोटां प्राण प्राण के कटकां
सूं पहरिया दिली-पतिसाह।
अेक कटारी कियो न अेकण
गजसिंघोत जिसो गज-गाह ॥ ३ ॥

दाणव बि-त्रिण पगां तळ दीधा
वणियै मरण दिखाळियो वाढ।
बाहो अेकण गंग-वंसोधर
जम-दाढां मांही जम-दाढ ॥ ४ ॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइयां (!) कीं। पर राठोड़ वीर राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, और अकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ दो-तीन यवनोंको पैरोंके नीचे दबा लिया। मरण आ पहुंचने पर मारकाटको दिखलाया। गंगाके वंशधरने यमकी दाढ़ोंके बीचमें अकेले कटारी चलायी।

(१)

वीर-वर्णन

कहै कंथनूं दुहूं कुळ ऊजळी कामणी
मळां फौजां भिळे, खाग वागे।
नानतो तिकानूं जिके भड़ नीसरै,
लारला वंसनूं गाळ लागै॥ १॥

सूरमा जिके रजपूत आव्रध सजै
लोह भिळतै मनां सु-जस लोभा।
कनक-आभूखणां सोहणै कामणी
सूर आभूखणां घाव्र सोभा॥ २॥

साम-रा कामनूं धसै दळ सामुहा
केत्रियां पछाड़ण फतै करणे।
सायता रह्यां निज सु-जस काने सुणै
प्राण छूटां पछै सती परणे॥ ३॥

---

१ पीहर और ससुराल इन दोनों कुलोंमें उज्ज्वल (यशस्विनी) कामिनी पतिसे कहती है—वीर वे हैं, जो अपने बलसे शत्रु-सेनाओंको विध्वस्त करते हैं और तलवार बजाते हैं। जो योधा ऐसे समयमें भाग निकलते हैं उनको लानत है। ऐसा करनेसे पिछले वंशको (पूर्वजोंको) कलंक लगता है। (नानतो=लानत, या लघुता)।

२ शूर क्षत्रिय वे हैं जो मनमें सु-यशकी लालसासे शस्त्र सजकर लोहा बजाते हैं। स्त्री सुवर्णके गहनोंसे शोभा देती है; शूरोंकी शोभा घावोंके गहनोंसे है।

३ सच्चे शूर स्वामीके कार्यके निमित्त शत्रुओंको पछाड़ने और विजय प्राप्त करनेके लिये शत्रु-सेनाके सम्मुख आगे बढ़ते हैं। जीवित रहने पर अपने कानोंसे अपना सु-यश सुनते हैं और मर जाते हैं तो पीछे सतीसे विवाह करते हैं (उनके मरने पर उनकी स्त्रियां सती होती हैं जो स्वर्गलोकमें उनसे आ मिलती हैं)।

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघोतरो

गढपतिसे घणा किया गढ-रोहा
परगह ले जूझिया पह।
जिण कीधो अमरेस जडाळो
किणहि न कीधो इम कळह ॥ १ ॥

कोटां ओट घणा जुध कीया
फौजां घणा किया फर-फेर।
राव राठौड़ जिही सूं-रौद्रां
नरपति विढियो न-को अनेर ॥ २ ॥

कोटां प्राण प्राण के कटकां
सूं पहरिया दिली-पतिसाह।
अेक कटारी कियो न अेकण
गजसिंघोत जिसो गज-गाह ॥ ३ ॥

दाणव बि-त्रिण पगां तळ दीधा
वणियै मरण दिखाळियो वाढ।
वाहो अेकण गंग-वंसोधर
जम-डाढां मांहो जम-डाढ ॥ ४ ॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइयां (!) कीं। पर राठौड़ वीर :राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, और अेकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ दो-तीन यवनोंको पैरोंके नीचे दबा लिया। मरण आ पहुंचने पर मारकाटको दिखलाया। गंगाके वंशधरने यमकी दाढ़ोंके बीचमें अकेले कटारी चलायी।

(१)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघोतरो

वडै ठौड़ राठौड़ अखियात राखी वडी
जोर धर जोध जम-दाढ अमरा।
सलावत दिली-पत देखतां साहियौ
धयो तिण वाररा रूप, अमरा ! ॥ १ ॥

गजनरा केहरी सिंघ जूंझार-गुर
माण तजि जगत्र सहु हुकम मानै।
पाड़िया तैं ज पतिसाहरी पाखती
खान सुरताण दीवाण-खानै ॥ २ ॥

हाकतौ दिली-दरियाव हीलोळतौ
ढूकड़ै साह उमराव ढाहे।
आगरै सहर हटनाळ पाड़ी अमर
मारुआ राव दरबार मांहे ॥ ३ ॥

---

१ हे यमकी यम-दंष्ट्रा के समान भयंकर और जोरावर योधा राठौड़ वीर ! तुमने बड़े स्थानमें बड़ी कीर्त्तिकी कथा की। सलावतखांको दिल्लीपतिके देखते-देखते मार डाला। हे अमरसिंह ! तुम्हारा उस समयका रूप धन्य है !

२ हे गजसिंहके केसरी सिंहके समान वीर पुत्र ! हे योधाओंके गुरु ! सारा जगत मान छोड़कर तेरा हुक्म मानता है। तूने ही बादशाहके दीवानखानेमें (दरबारमें) बादशाहके निकट ही उमरावोंको गिराया।

३ हांक लगाते हुओ और दिल्ली-रूपी समुद्रको हिलाते हुओ अमरसिंहने बादशाहके पास उमरावोंको गिराया। मारवाड़के रावने आगरे शहरमें दरबारके अन्दर हड़ताल कर दी (सारे लोग दरबार

पगे पहरै उठै हाथमूं पाहरै
कोइ भडि न-को असमान लागै।
सो जिसौ झूझियौ न-को हिंदू-तुरक
अमर ! अकबर-तणा तखत आगै ॥ ४ ॥

(५)

गीत राठोड़ बलू गोपालदासौत चांपावतरो

बिजड़ झटियौ घूणि गिरि-मेर सो बहादर
पछै म्हे कदे अवसाण पावां ?
अमरनै सुरग दिस मेलनै एकलौ
आगरै लड़ेवा कदे आवां ? ॥ १ ॥

अम्हे तो अमर राजा तणा ऊमरा
जुड़ेवा पारकी धटी जागां।
बोलियौ बळू पतसाहरे बराबर—
मारवै रावरौ वैर मांगां ॥ २ ॥

---

४ जहां पैरोंमें पहनते थे वहां हाथोंमें पहनने लगे (पैरोंमें पहननेके जूते हाथोंमें लेकर दरबारके लोग भागे), हथियार लेकर कोई आसमान तक नहीं उठता (वीर-दर्पसे सिर ऊंचा करके सामने नहीं आता)। हे अमरसिंह ! अकबरके सिंहासनके सामने कोई हिंदू या मुसलमान तुम्हारी तरह नहीं लड़ा।

१ वह मेरुपर्वत-सा वीर खड्गको घुमाता हुआ उठा। बोला—पीछे हम ऐसा अवसर कब पावेंगे ? अमरसिंहको अकेला स्वर्ग भेजकर फिर आगरेमें लड़ने कब आवेंगे ?

२ हम तो राजा अमरके उमराव हैं, युद्ध करनेके लिये परायी भूमिमें (?) जागते हैं। बलू बादशाहके बराबर (रूबरू) बोला—हम तुमसे मारवाड़के राव अमरसिंहका बैर मांगते हैं।

केसरणा मांद गरकाब वागा करे
सेहरो बांध हलकार साथे।
अमररो भतीजो बोल खग आयग्गे
भळू अर आगरो हुआ बाथे॥ ३॥

पटाने नाखि भिड़ साहसूं चटापड़
काम नवकोट साचो कमायो।
बाद कर साहसूं वैर नृप बोढियो
अमर नै मुहर करि सरग आयो॥ ४॥

(५)

गीत राठौड़ बलू गोपालदासौतरो

कहर काळ लंकाळ बळिराव गज केसरी
जोध जोधां सरिस अेम जूटो।
सांकळां हूंत नाहर किनां छिछूटो
तगखिआं कासिपो किनां तूटो॥ १॥

---

३ केशरिया रंगमें वागेको (जामेको) गरकाब करके और ललकारके साथ सेहरा बांधकर अमरसिंहका भतीजा बलू तलवार उठाकर बोला—और बोलते ही बलू और आगरा दोनों भिड़ गये (आगरा=बादशाहके सरदार)।

४ शाही जागीरको फेंककर और बादशाहसे चटापट भिड़कर राठौड़ वीरने सच्चा काम किया। बादशाहसे बराबरी करके राजा अमरसिंहके बैरको सिरपर ओढ़ा। फिर अमरको आगे करके (अमरके पीछे-पीछे) स्वर्ग आ पहुँचा।

१ प्रलय-काल तथा सिंहके समान भयंकर, बलवानोंका राजा, हाथियोंके लिये सिंह रूप, वीर बलू योधाओंके साथ इस तरह भिड़ गया मानो जंजीरोंसे सिंह छूटा हो अथवा मानो सांपों पर गरुड़ झपटा हो।

दूसरो मयंक दुहवॆं दळां देखतां
ओट घट छडाऊं प्रमत जड़ियो !
हसत दीठा समा सीह घाथां हुओ
पनग-सिर किनां खग-पंख पड़ियो ॥ २ ॥

पाळ-रा नमो हथ-बाह बाहां प्रलंब
तळिछि सुदर लियौ दळां अणताघ (?)।
खरह पड़ियो किनां गरुड़ अहि ऊपरे
विरड़ छूटो किनां गजां सिर बाघ ॥ ३ ॥

(६)

गीत चोहाण किसनदास अचलावतरो

कळि चालि लंकाळ कहै इम केहरि
विढिया कजि ऊछजि केवाण।
चलिये दळे विमुहि थयूं चालूं
चलियो विमुहि न-को चहुआण ॥ १ ॥

---

१ दूसरे मयंक, मालाधारी, वीर बलूने दोनों दलोंके देखते शत्रुओं पर भयंकर आघात किया (?), मानो हाथियोंको देखते ही सिंह भिड़ गया हो अथवा मानो सांपोंके सिर पर गरुड़ पड़ा हो।

२ लंबी भुजाओंवाले गोपालके पुत्र बलूके हाथ चलानेको नमस्कार है। अगार सेनाओंपर वह इस तरह टूटकर पड़ा (?) मानो उड़कर गरुड़ सर्पों पर पड़ा हो अथवा मानो क्रोधमें भरकर सिंह हाथियों पर झपटा हो।

१ भयंकर युद्धमें सिंहके समान वीर केसरी लड़नेके लिये तलवार उठाकर इस प्रकार कहता है—सेनाके पीछे मुड़ जाने पर भी मैं पीछे क्यों मुड़ूं, कोई चौहान कभी युद्धमें पीछे नहीं मुड़ा।

चौरंग घलै नहीं अचळावत
 झाड़ै प्रसण दिये खग-झीक।
मुड़िया दळ देखे नह मुड़ियौ
 मुड़िये दळ जुड़ियौ मछरीक ॥ २ ॥

कळहि सीह ज्यूं सीह-कळोधर
 निडर निहसियौ बाधे नेत।
खड़िया दळ देखे नह खड़ियौ
 खड़िये दळ लड़ियौ रिण-खेत ॥ ३ ॥

भागां साथ न भागौ अणभंग
 आप विढे भांजिया अरि।
केहरि सरग पहूतौ अणकल
 करनहरौ अखियात करि ॥ ४ ॥

---

२ अचलदासका बेटा युद्धमें नहीं मुड़ता। वह खड्गके आघात कर शत्रुओंको झाड़ता है। सेनाओंको मुड़ी हुई देखकर भी वह नहीं मुड़ा। वह क्रोधी, सेनाके मुड़ने पर, स्वयं शत्रुओंसे जा भिड़ा।

३ सीहाका वंशज नेत बाधकर युद्धमें सिंहकी तरह निडर होकर लड़ा। वह सेनाओंके भाग जाने पर नहीं भागा। वह सेनाओंके भागने पर रण-क्षेत्रमें लड़ा।

४ वह अपराजेय वीर भागे हुओंके साथ नहीं भागा। उसने स्वयं लड़कर शत्रुओंको भगाया। कर्णसिंहका वंशज केहरी अद्भुत कीर्ति-कथा करके स्वर्गमें पहुँचा।

वात दूदै जोधावतरी

[दूदै जोधावत मेघो नरसिंघदासौत सींधल मारियौ ।]

राव जोधौ पौढियो हुतौ ; वातपोस वातां करता हुता । राजव्रियां-स्यां वातां करता हुता । ताहरां अेक कह्यौ—भाटियां-रौ वैर न रहै । ताहरां अेक बोलियौ—राठोड़ां-रै वैर अेक रह्यो । कह्यौ—किसौ ? कह्यौ—आसकरण सतावत-रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वैर रह्यौ ।

ताहरां राव जोधै वात सुणी । ताहरां वत्रां-नूं पूछियौ—थे कासूँ कह्यौ ? कह्यो—जी ! क्यूंही नहीं । ताहरां बोलियौ—ना, ना, कह्यो । ताहरां कह्यौ—जी ! आसकरण-रै छोरू न हुवो, नै नरबद-रै पिण छोरू नहीं, तै वैर यूंही रह्यो । राव जोधै वात सुणि-नै मन-में राखी ।

प्रभाते दरबार बैठा छै । तितरै कुंवर दूदै आइनै मुजरौ कियौ । सू दूदै-सूँ राव़जी कु-मया करता । ताहरां राव़जी कह्यौ—दूदा, मेघो सींधल मारियौ जोयीजै । ताहरां दूदै सलाम की । ताहरां राव़जी बोलिया—दूदा ! आसकरण सतावत-

---

कहानी जोधाके बेटे दूदे की

जोधाके बेटे दूदेने नरसिंहदासके बेटे मेघेको मारा इसकी कहानी

[अेक दिन] राव जोधा सोया हुआ था । कहानी कहनेवाले बातें कर रहे थे—रईसोंकी बातें करते थे । उस समय अेकने कहा—भाटियोंका बेर नहीं रहता । अेक बोला—राठोड़ोंका बेर नहीं रहता । तब अेक बोला—राठोड़ोंका अेक बेर बाकी रह गया । कहा—कौनसा ? कहा—सताके बेटे आसकर्णका बेर बाकी रहा, नरबदजी सुपियारदेको लाये थे वह बेर बाकी रहा ।

तब राव जोधेने बात सुनी । [उसने] उनसे पूछा—तुम लोगोंने क्या कहा ? उन लोगोंने कहा—जी ! कुछ भी नहीं । तब जोधाने कहा—नहीं, नहीं, कुछ कहा था । ... बेटा नहीं हुआ और नरबदके भी बेटा नहीं, जिससे बेर बाकी

जाहरां दूदो बोलियो—हे ! ओ कुण बोले ? कह्यो—जी ! मेघो बोले है। कह्यो—हे ! इत्ता अंळगे सुणीजै है ? कह्यो—जी ! मेघो सींवल काने सुणियो है कि नहीं ? म्हें धाडवियां-सूं काम नहीं, धन-माल-सूं काम नहीं, म्हांनै थारै माथे-सूं काम है, परत-रो भेड़ करिस्यां।

जाहरां दूजे दिन मेघो साथ सजने आयो इणे तरफ-सूं दूदो आयो। जाहरां मेघो कहै—दूदाजी ! थां अवसर आयो, रजपूत तो म्हारा सरब म्हारे बेटे-रै माहे जान गया; हूं हूं। जाहरां दूदो कहै—मेघा ! आपां परत-री भेड़ करिस्यां, रजपूतां-नूं क्यूं मारां ? का दूदो मेघे, का मेघो दूदे। आपां-होज साफलो हुसी। जाहरां साथ दोनां-रो अळगो ऊभो रह्यो। अेके दिसा मेघो आयो, अेके दिसा-सूं दूदो आयो।

जाहरां दूदो कहै—मेघा ! करि घाव। मेघो कहै—दूदोजी ! करो घाव। जाहरां दूदो कहै—मेघाजी ! थे घाव करो।

तब दूदा बोला—अरे ! यह कौन बोलता है। लोगोंने कहा—जी ! मेघा बोलता है। दूदेने कहा—अरे ! इतनी दूर तक सुन पड़ता है ! कहा—जी ! मेघे सिंघलको कानोंसे सुना है या नहीं ?

दूदेने कहा—मेघा ! मुझे धाड़ियोंसे काम नहीं, धन-संपत्तिसे काम नहीं, मुझे तो तेरे सिरसे काम है, परत (?) की लड़ाई करेंगे।

तब दूसरे दिन मेघा साथको सजाकर आया। इस ओरसे दूदा आया। तब मेघा कहता है—दूदाजी ! आपने अवसर पाया, मेरे सारे राजपूत तो मेरे बेटेके साथ बरातमें गये हुअे हैं, मैं [अकेला] हूँ। तब दूदा कहता है—मेघा ! अपन द्वन्द्व-युद्ध (?) करेंगे, राजपूतोंको क्यों मारें ? या तो दूदा मेघेको या मेघा दूदेको; अपन दोनोंके बीचमें ही युद्ध होगा।

तब दोनोंका साथ दूर खड़ा रहा। अेक दिशासे मेघा आया और अेक दिशासे दूदा आया। तब दूदा कहता है—मेघा ! वार कर। मेघा कहता है—दूदाजी ! आप वार कीजिये। तब दूदा कहता है—मेघाजी ! आप वार कीजिये। तब मेघाने वार किया।

ताहरां मेघै घात्र कियौ। सो दूदै ढाळ-सूँ ढाळि दियौ। दूदै पाबूजी-नूं समार

नूँ घात्र कियौ। सु माथौ धड़-सूं अळगौ जाइ पड़ियौ। मेघौ काम

यौ।

ताहरां मेघै-रौ माथौ वाढि-नै दूदौ ले हालियौ। ताहरां आपरां राजपूतां

ौ—मेघै-रौ माथौ धड़ ऊपरां मेल्हौ, वडौ रजपूत छै। ताहरां दूदै माथौ

लियौ। दूद कह्यौ—कोई गाम-रौ वजाड़ मती करौ, मेघै-सूं काम हुतौ।

मेघै-नूं मारि दूदौ अपूठौ फिरियौ। आयनै रात्र जोधै-नूं तसलीम कीधी।

रात्र राजी हुवौ।

जोधैजी दूदै-नूं घोड़ौ सिरपात्र दियौ। बहुत राजी हुवा।

उसे दूदेने ढालसे टाल दिया। फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघे पर वार किया।

सो सिर धड़से दूर जा गिरा। मेघा काम आया।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला। अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर

धड़के ऊपर रखो, मेघा बड़ा राजपूत है। तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा। फिर दूदेने

कहा—मेघेके किसी गांवका बिगाड़ मत करो, हमारा तो केवल मेघेसे काम था।

मेघेको मारकर दूदा वापिस मुड़ा। आकर राव जोधेकी तसलीम की। राव प्रसन्न

हुआ। जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया। बहुत प्रसन्न हुए।

नवीन राजस्थानी साहित्य

पातल और पीथल

(प्रताप और पृथ्वीराज)

[कन्हैयालाल सेठिया]

[श्री कन्हैयालाल सेठिया आधुनिक राजस्थानीरा समर्थ कवि है। राजस्थानी इतिहासरी सु-प्रसिद्ध घटनानै लेयनै आप आ अमर कविता लिखी है। भावारो प्रवाह और ओज इण कवितारा विशेष गुण है।]

(१)

अरे ! घास-री रोटी ही जद बन-बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हो-सो अमर्यो[1] चीख पड्यो राणा-रो सोयो दुख जाग्यो

हूं लड्यो घणो, मैं सह्यो घणो, मेवाड़ी मान बचावण-नै
मैं पाछ[2] नहीं राखी रणमें बैर्यां-रो खून बहावण-में
जद याद करूं हळदी-घाटी, नैणां-में रगत उतर आवै
सुख-दुख-रो साथी चेतकड़ो[3] सूती-सी हूक जगा जावै
पण आज बिलखतो देखूं हूं जद राज-कंवरनै रोटी-न
तो क्षात्र-धर्म-नै भूलूं हूं, भूलूं हिंदवाणी चोटीनै

मैं'लां-में[4] छप्पन भोग जका मनवार बिना करता कोनी
सोना-री थाळयां नीलम-रा बाजोट[5] बिना धरता कोनी
अै हाय ! जका करता पगल्या[6] फूलां-री कंवळी सेजां पर
बै आज रुळै भूखा-तिसिया[7] हिंदवाणे-सूरज[8]-रा टाबर
आ सोच हुयी दो टूक तड़क राणा-री भीम-बजर छाती
आंख्यांमें आंसू भर बोल्या,— हूं लिखसूं अकबर-नै पाती

---

१ अमरसिंह महाराणा प्रतापके पुत्रका नाम था २ कमी रखी, पीछे रहा ३ प्रतापके घोड़ेका नाम था ४ महलोंमें ५ पट्टे ६ धीरे-धीरे पैर रखते ७ प्या[illegible] ८ हिंदुआसूर्य मेवाड़के राणाओंकी उपाधि है।

(२)

पण लिखूं कियां, जद देखै है — आडावळ[९] ऊंचो हियो लियां
चित्तोड़ खड्यो है मगरां-में[१०] — विकराळ भूत-सो लियां छियां[११]
हूं झुकूं कियां? है आण मनै — कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं कियां, हूं शेष लपट — आजादी-रा परवानां-री[१२]

पण फेर अमर-री सुण सुसक्यां[१३] — राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनै — सम्राट,—सनेसो[१४] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद बांच हुयो — अकबर-रो सपनो सौ[१५] सांचो
पण नैण कर्‌यो विश्वास नहीं, — जद बांच-बांच-नै फिर बांच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ बह्यो, — कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, — यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या — पीथल-नै तुरत बुलावण-नै
किरणां-रो[१६] पीथल[१७] आ पूग्यो — ओ सांचो भरम मिटावण-नै

बीं वीर बांकुड़ै पीथल-नै — रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, — राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
वैर्‌यां-रै मन-रो कांटो हो, — वीकाणो[१८] पूत खरारो[१९] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, — बस सागी[२०] तेज दुधारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, — घावां पर लूण लगावण-नै
पीथल-नै तुरत बुलायो हो — राणा-री हार बंचावण-नै

---

९ आडावला (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकियां १४ संदेश १५ सारा १६ किरणोंशत्रु, किरणमयीका पति १७ पृथ्वीराज १८ बीकानेरका १९ खरा २० ठीक वही।

(४)

म्हे बांध लियो है, पीथल ! सुण पिंजरे-में जंगळी सेर पकड़
ओ देख हाथ-रो कागद है, तूं देखां, फिरसी कियां अकड़
मर डूब चळू भर पाणी-में, बस झूठा गाल वजावै हो
पण[21] टूट गयो वीं राणा-रो, तूं भाट बण्यो विरदावै[22] हो
हूं आज पातस्या धरती-रो, मेवाड़ी पाघ[23] पगां-में है
अब बता मनै, किण रजवट-रै रजपूती खून रगां-में है ?

जद पीथल कागद ले देखी राणा-री सागी सैनाणी
नीचै-सूं धरती खिसक गयी, आंख्यांमें आयो भर पाणी
पण फेर कही ततकाळ संभळ,— आ बात सफा[24]-ही झूठी है
राणा-री पाघ सदा ऊंची, राणा-री आण अटूटी है

लो, हुकुम हुवै तो लिख पूछूं राणा-नै कागद-रै खातर
लै पूछ भलां ही, पीथल ! तूं, आ बात सही, बोल्यो अकबर

(५)

म्हे आज सुणी है, नाहरियो स्याळां-रै सागै सोवैला
म्हे आज सुणी है, सूरजड़ो बादळ-री ओटां खोवैला[25]
म्हे आज सुणी है, चातकड़ो धरती-रो पाणी पीवैला
म्हे आज सुणी है, हाथीड़ो कूकर-री जूणां[26] जीवैला

म्हे आज सुणी है, थकां खसम[27] अब रांड हुवैला रजपूती
म्हे आज सुणी है, म्यानां-में तरवार रवैला[28] अब सूती
तो म्हा-रो हिवड़ो कांपै है, मूंछ्यां-री मोड़-मरोड़ गयी
पीथल-नै, राणा ! लिख भेजो, आ बात कठै तक गिणां सही ?

---

२१ प्रण, प्रतिज्ञा २२ बखानता था २३ पगड़ी २४ साफ ही २५ खो जायगा, जायगा २६ जीवन २७ पतिके होते हुए २८ रहेगी।

(६)

पीथल-रा आखर पढ़तां-ही राणा-री आंख्यां लाल हुयी
धिक्कार मनै, हूं कायर हूं, नाहर-री अेक दकाळ[२९] हुयी
हूं भूख मरूं, हूं प्यास मरूं, मेवाड़ धरा आजाद रवै[३०]
हूं घोर उजाड़ां-में भटकूं, पण मन-में मां-री याद रवै

हूं रजपूतण-रो जायो हूं, रजपूती करज चुकाऊंला
ओ सीस पड़ै, पण पाघ नहीं, दिल्ली-रो मान झुकाऊंला

(७)

पीथल ! के खमता[३१] बादळ-री, जो रोकै सूर-उगाळी-नै[३२]
सिंघां-री हाथळ[३३] सह लेवै, बा कूख[३४] मिली कद स्याळी-नै
धरती-रो पाणी पियै, इसी चातक-री चूंच बणी कोनी
कूकर-री जूणां जियै, इसी हाथी-री बात सुणी कोनी
!
आं हाथां-में तरवार थकां कुण रांड कवै है रजपूती ?
म्यानां-रै बदळै बैर्यां-री छात्यां-में रैवैली सूती

मेवाड़ धधकतो अंगारो आंध्यां-में चमचम चमकैला
कड़खा-री[३५] उठती तानां पर पग-पग पर खांडो खड़कैला
राखो थे मूंछ्यां अैंठ्योड़ी[३६] लोही[३७]-री नदी बहा दूंला
हूं तुरक कहूंला अकबर-नै, उजड्यो मेवाड़ बसा दूंला

जद राणा-रो संदेस गयो, पीथल-री छाती दूणी ही
हिंदवाणो सूरज चमकै हो, अकबर-री दुनिया सूनी ही

---

२९ गर्जना ३० रहे ३१ क्या सामर्थ्य ३२ उदयको ३३ हाथकी चपेट ३४ कोख, संतान ३५
३६ अैंठी हुई, बल खायी हुई ३७ लोहूकी ।

बारठ केसरीसिंह

(उदयराज ऊजल)

[उदयराजजी राजस्थानरा जाणीता राष्ट्रीय कवि है। आ कविता आप राजस्थानी साहित्यरा आधुनिक युगरा जन्मदाता बारठ केसरीसिंह सौदा मार्थ लिखी है।]

अडग देस अनुराग खत्र-वट-पूजारो खरो
ताकव तीखो त्याग करग्यो सोदो केहरी

थिर संपत रजथान भ्रात पुत्र संचित विभौ
देस हेत बळिदान करग्यो सरबस केहरी

रयो निरंकुस राह धुन सुतंत्रता धारणो
पिंड स्वारथ पर्वाह करी न बारठ केहरी

करग्यो केसरिया केसरिया! जिण कारणै
कांगरेस करिया भेस तम्हीणा भारती

साहांनै सुभराज दीधा केइक दूथियां
गोरां ऊपर गाज करग्यो अेक-ज केहरी

---

१ देशके प्रेममें अडिग, वीर-मार्गका सच्चा पुजारी चारण केसरीसिंह सौदा बड़ा भारी त्याग कर गया।

२ केसरीसिंह देशके लिअे स्थिर संपत्ति, जागीर, भाई-बेटे, संचित वैभव आदि सर्वस्व बलिदान कर गया।

३ स्वतंत्रताकी धुनको धारण करनेवाला सदा निरंकुश मार्ग पर चला। केसरीसिंहने शरीर और स्वार्थकी पर्वाह नहीं की।

४ हे केसरीसिंह! जिसके लिअे तू केसरिया बाना कर गया उसीके लिअे वही तुम्हारा वेश अब कांग्रेसने कर रखा है।

५ बादशाहोंको आशीर्वाद कईअेक चारणोंने दिया पर फिरंगियों पर गर्जना अेक केसरीसिंह ही कर गया।

खेतमें

[कंवर मोतीसिंह]

[कंवर मोतीसिंह राजस्थानी ग्राम-जीवणरा कवि है । कदेई प्रकृतिरो सादगी चित्रण करे तो कदेई करुण कहाणी कैण लाग ज्यावै । अनै कीक दार्शनिक भी चाल्या है ।]

(१)

आज मोरियां ! राग सोवणी
मनै घणी मन भावै
पिऊ-पिऊ[1] सुण प्यासो हिवड़ो
जी-री प्यास बुझावै

(२)

हरियो-भरियो खेत सोवणो
सरवरियो लहरावै
धीमी-धीमी परवा[2] चालै
मनड़ै मोद न मावै

(३)

आभैमें[3] वादळिया दौडै
झिरमिर मेवळो[4] आसी
बाजररै बूंटामें[5] प्यासी
वेछां पाणी पासी

(४)

आधी[6] दळ्तां आय सुसीसूं
थास्यूं जद सो जास्यूं
दिन-ऊगारी टंडी हवामें
थास्यूं अद उठ जास्यूं

---

१ पीहू-पीहू बोली २ पुरवाई हवा ३ आकाशमें ४ मेह ५ पौधोंमें ६ आधी रा

लाभू बाबो

([illegible])

[illegible] बाबो [illegible] किसे [illegible] हो [illegible] कोनी पण म्हारा बापोती-[illegible] हमूलने [illegible] हो जिण्रूं म्हे तो उणनै उणरो ही समझता। भोला मूंढारो [illegible], [illegible], हो जणूं ही म्हारा घरनै [illegible] आवो हो। हो तो बो दो [illegible] [illegible] म्हारा घरा लोग उणनै कदेई नौकर को समझियो नी। कांई छोटा अर कांई बडा—[illegible] उणरो आदर करता। बडा लोग लाभू, लुगायां लाभूजी, और म्हे टाबर लाभू बाबो कैर बतलावता। बां'रा लोग लाभू बाबाने म्हारा ही घररो आदमी समझता। लाभू बाबो आप म्हारा घरनै ही आपरो घर समझतो। टाबरपणामें म्हे उणरे गणी हीलियोड़ा हा।

लाभू बाबो गोरा रंगरो, तकड़ा सरीररो अर सपेत दाढ़ीरो पैंसठ बरसरो जवान हो। गोवटीरी बाटी धोती और बंडी पेरतो। माथा मायै गुलमुलरी पाग बाधी राखतो। गळामें दरदारी कंठी और हाथमें काठरा मिणियांरी माळा हर दम रैवती। सीयाळामें देसी ऊनरी कामळ ओढ़तो। ओ लाभू बाबारो पैरेस हो।

लाभू बाबो जातरो मंडीवाळ धनावंसी साध हो। बापरो नाव श्रीकिसनदास, काकारो बुदरदास अर माईरो नाव आणदो हो। काको बुदरदासजी रामायण, महाभारत वगैरा शास्त्रांरा मोटा पिंडत हा। लाभू बाबै टाबरपणामें उणां कनै शास्त्रांरो ग्यान सीखियो। टाबरपणामें सीखियोड़ा इण ग्यानसूं लाभू बाबो बिना पढिया ईज पिंडत हुग्यो हो। उणनै शास्त्रां और पुराणां तथा इतिहासरी कुण जाणै कित्ती वातां याद ही। लाभू बाबो भणि-योड़ो कोनी हो पण ग्यानमें बडा-बडा भणियोड़ांनै छेड़ै बैसाणतो। लाभू बाबो कह्या करतो—नाणो अंटरो, विद्या कंठरी।

लाभू बाबो म्हारा घरमें चाळीस वरसांसूं कम को रह्यो नी। बो अेकलो जको काम करतो बो आज च्यार आदमियांसूं कोनी हुवै। भांझरके च्यार वज्यां उठतो। उठनै भजन करतो। पछै सगळा घरमें बुहारी देतो, पाणी छाणतो, विलोवणो करतो, पोटा थापतो, ढाणारी सफाई करतो, गायां-भैंसां नै पाणी पांवतो अर नीरो नाखतो। पछै दूजा काम करतो।

गांधी

[नाथूदान महियारिया]

[नाथूदानजी नवयुगरा चारण-कवि है । आप अेक नवीन वीर-सतसई ग्रंथरी चना करी है ।]

फौजां रोकै फिरंगरी[1] तोकै नह[2] तरवार
गांधी ! तैं लीधो गजब भारतरो भुज भार

[उदयराज ऊजळ]

सोरा[3] सात समंद मीठा करणा मानवी
परतंततारो फंद भारी[4] काटण, मानिया !
माता हित मरणो[5] मोटो तीरथ मानणो
भाव इसा भरणो भारत गांधी, मानिया !

डोकरर[6] भुज-दंड ओण[7]तपोबळ आसरै
पळटी वेग प्रचंड भारत-काया, मानिया !
पग-पग जेळां पाय गांधीरी ऊमर गयी
डोकर दयै छुडाय भारत माता, मानिया !

करता वैम[8] कदेक क्यूं हुंसो[9] फांसी पड्यो
दिस गांधीरी देख भयो भरोसो, मानिया !
जादू-लकड़ी जोर परतंतर भारत पड्या
सप . गांधीरै सोर[10] भचकै[11]छूट्यो, मानिया!

---

[1] फिरंगियोंकी २ नहीं धारण करता है ३ आसान ४ कठिन ५ मरनेको
... बृद्ध. संयम ८ वैमनसी ९ ... १० बसो ११ अचानक ।

रोटी-कपड़ो चाहिजो पण लाभू बाबै दूजे घर नौकरी नहीं करी स नहीं करी। लाभू बाबो प्रेमरो भूखो हो, टकांरो लोभी को हो नी।

जवानीमें लाभू बाबो घणो तागतवर हो। अेक वार बडा दादाजी दानमलजीरी हवेली चिणीजती ही जद पथरांरी थांभ चढावण वास्तै हमालांनै बुलाया। दस-दस मण भारी अेकलिया देखनै हमालां जीभ काढ दी। जद सेठां लाभू बाबानै वकारियो। लाभू बाबै अकेलै ही दस-दस मणरा अेकलिया चढा दिया।

जतियांरी हालत देखनै लाभू बाबो कह्या करतो—

फेई जती सेवड़ा सिर मूंडा।
करमां-री गतसूं हुया भूंडा॥

लाभू बाबै कई मेरा, जीमण, औ़ब्रतखर्च आपरा नै आपरी सामथरा करिया। हिन्दू और जैन तीरथांरी जात्रावां करी। और मरतो सईकड़ूं रुपिया आपरी लुगाई मोलांरै वास्तै छोड़ग्यो। दो-च्यार रुपिया कमावणआळो आदमी किण भांत सुखी जीवण विता सकै, लाभू बाबो इणरो प्रतख उदाहरण हो।

लाभू बाबै आपरा जीवणरा शेष दिन गांवमें गालिया। मांचा माथै बैठो-सूतो हरदम भजन करतो रैवतो। म्हों टाबरांनै देखण सिवाय कैई वात-री मनमें ही कोनी ही। पिताजी मिलण वास्तै गॉव गया जद उणांनै आया सुणतां पाण उभाणै पगां सो पॉवड़ों साम्हो आयो। लोगांनै घणो अचरज हुयो कै आज बाबारा बूढा पगांमें इती शक्ति कठां-सूं आयगी।

लाभू बाबानै स्वर्गवासी हुयाँ आज बीस बरस हुग्या है पण म्हारा मनमें बाबारी अर बाबारा गुणाँरी याद आज ताणी ताजी है।

म्हांरै हुंडी-चिट्ठीरो काम हुतो। लोट चालिया कोनी हा, हजारूं रुपिया रोकड़ी लावण-ले ज्यावणरो काम पड़तो। ओ सगळो काम लाभू बाबो करतो। भणियोड़ो अेक आखर को हो नी पण लाखूं रुपियांरो काम भुगता देतो और कदेई अेक पईसै-री ही भूल को पड़ी नी।

गांव-गोठरी बोरगत हुणैसूं म्हांरै अठै बारलो फेटो घणो हो। रोज दस-पांच आदमी आया-गया रैवता। उण दिनांमें कळरी चक्की तो ही कोनी, हाथसूं आटो पीसणो पड़तो। पीसारणियां आटो पीसती। लाभू बाबै थकां अेन मौकै आटारा फोड़ा कदेई को देखणा पड़ता नी। बिना कह्यां आधी रातरा उठ-नै घमड़-घमड़ दूंदा नाखतो। दिन ऊगतो जद आधमण आटो त्यार।

लाभू बाबो काम करणनै सदा जाणै त्यार हीज रैवतो। हरेक आदमीरो काम निःस्वार्थ-भावसूं करतो। घररो तो कांई, गवाड़रो भी कोई जणो काम वास्तै बकारतो तो ऊतर को देतो नी। हेलो सुणतां पाण झट बोलतो—आयो। जीमतो हुतो तो थाळी छोड किनारै हाथ धोय-नै आ हाजर हुंतो। केई काममें रूंधियोड़ो हुतो तो-ई आ कदेई को कैवतो नी कै फलाणो काम करूं हूँ। अेक 'आयो' शब्द हीज सदा मूंढासूं नीकळतो। लाभू बाबो कैवतो—'हूं फलाणो काम करूं हूं' इयांन कैणो अेक तरांसूं ऊतर देणो है। कामरो ऊतर देणो लाभू बाबो जाणतो ही कोनी हो।

टाबरांनै, विशेषकर म्हां तीनांनै—काकोजी मेघराजजी, काकोजी अगरचंदजी और मनै, बडी हींयाळीसूं राखतो। अेकनै गोदीमें, दूजानै खांधा माथै अर तीजानै मगरां माथै राखियां काम करतो रैतो। म्हांनै घणा ओखाणा अर दूहा सुणावतो। सिंझ्या पड़ती जद म्हे लाभू बाबानै बात कैवण वासतै पकड़नै बैठाय लेता। बाबो म्हांरी फरमास अर रुचि मुजब बातां सुणावतो—कदेई रामायणरी, कदेई महाभारतरी, कदेई इतिहासरी, कदेई धूजीरी, कदेई प्रह्लादरी, कदेई नरसीजीरा माहेरारी।

लाभू बाबो रामरो भगत, कर्त्तव्यशील और निर्लोभी हो। शास्त्रांरी कथावांरा ... मूंढामें

आदर्श बाबै आ

रामरो नाव हर

लाभू बाबानै दो

पुस्तक-परिचय *

१ बादली—लेखक-चंद्र चन्द्रसिंह। भूमिका-लेखक—सीतामऊ-महाराजकुम श्रीरघुवीरसिंहजी। आकार—डबलक्राउन सोलहपेजी। पृष्ठसंख्या १२+१०२। मो ॲंटीक कागज। बीकानेर-महाराजकुमारका चित्र। कलापूर्ण रंगीन चित्रवा आवरण पृष्ठ। प्रथमावृत्ति, सं० १९९८। मूल्य १)। प्रकाशक—प्राच्य-कला-नि तन, बीकानेर (अब जयपुर)

ऋतुओंमें वर्षा ऋतुका अपना निराला महत्त्व है। वसंत ऋतुराज कहा ग है तो वर्षाको ऋतुओंकी रानी कहा जा सकता है। वसंत राजसी ऋतु है, व सर्वहारा वर्गका। वसंत जीवनको नाना रूपोंमें प्रकट करता है पर उसका आधार तो वर्षा ही है भारतके लिये वर्षा बड़े महत्त्वकी ऋतु है पर राजस्था का तो वह जीवन ही है—राजस्थानका जीवन ही उस पर निर्भर है। फल प्रत्येक राजस्थानी कवि वर्षासे अभूतपूर्व प्रेरणा पाता है और वर्षाका वर्णन क समय उसका हृदय उसके साथ पूर्णरूपेण तदाकार हो जाता है।

बादली (हिन्दी बदली) राजस्थानी भाषाका अेक सुन्दर प्रकृति-काव्य उसमें वर्षाकालके नाना-रंगी चित्र बड़ी ही स्वाभाविक और सरस भाषामें अंकि किये गये हैं। दूहा छंद लिखनेमें चंद्रसिंह अद्वितीय हैं।

ग्रन्थके आरम्भमें सीतामऊके महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजीकी छो सी सारगर्भित प्रस्तावना है और अन्तमें पं० रावत सारस्वतका हिंदी अनुवाद जैसा सुन्दर काव्य हुआ है वैसा ही सुन्दर यह अनुवाद है जो कहीं-कहीं मूलसे भी अधिक सुन्दर हुआ है। काव्यमें आये कठिन और अपरिचित रा स्थानी शब्दोंके हिन्दी अर्थ अन्तमें शब्दकोष देकर दिये गये हैं।

---

* इस स्तंभमें आलोचित सभी पुस्तकें नवयुग-ग्रन्थ-कुटीर, पुस्तक प्रकाशक अं क्रेता, बीकानेर (राजपूताना) के पतेसे मंगायी जा सकती है।

पुस्तक-परिचय *

१ बादळी—लेखक-कंवर चन्द्रसिंह । भूमिका-लेखक—सीतामऊ-महाराजकु श्रीरघुवीरसिंहजी । आकार—डबलक्राउन सोलहपेजी । पृष्ठ संख्या १२+१०२ । अंटीक कागज । बीकानेर-महाराजकुमारका चित्र । कलापूर्ण रंगीन चित्रव आवरण पृष्ठ । प्रथमावृत्ति, सं० १९९८ । मूल्य १) । प्रकाशक—प्राच्य-कला-नि तन, बीकानेर (अब जयपुर)

ऋतुओंमें वर्षा ऋतुका अपना निराला महत्त्व है। वसंत ऋतुराज कहा है तो वर्षाको ऋतुओंकी रानी कहा जा सकता है। वसंत राजसी ऋतु है, सर्वहारा वर्गका। वसंत जीवनको नाना रूपोंमें प्रकट करता है पर उसका आधार तो वर्षा ही है भारतके लिये वर्षा बड़े महत्त्वकी ऋतु है पर राजस्थ का तो वह जीवन ही है—राजस्थानका जीवन ही उस पर निर्भर है। फ प्रत्येक राजस्थानी कवि वर्षासे अभूतपूर्व प्रेरणा पाता है और वर्षाका वर्णन समय उसका हृदय उसके साथ पूर्णरूपेण तदाकार हो जाता है।

बादळी (हिन्दी बदली) राजस्थानी भाषाका अेक सुन्दर प्रकृति-काव्य उसमें वर्षाकालके नाना-रंगी चित्र बड़ी ही स्वाभाविक और सरस भाषामें अं किये गये हैं। दूहा छंद लिखनेमें चंद्रसिंह अद्वितीय हैं।

ग्रन्थके आरम्भमें सीतामऊके महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजीकी छ सी सारगर्भित प्रस्तावना है और अन्तमें पं० रावत सारस्वतका हिंदी अनुवा जैसा सुन्दर काव्य हुआ है वैसा ही सुन्दर यह अनुवाद है जो कहीं-कहीं मूलसे भी अधिक सुन्दर हुआ है। काव्यमें आये कठिन और अपरिचित रा स्थानी शब्दोंके हिन्दी अर्थ अन्तमें शब्दकोष देकर दिये गये हैं।

---

* इस स्तंभमें आलोचित सभी पुस्तकें नवयुग-ग्रन्थ-कुटीर, पुस्तक प्रकाशक विक्रेता, बीकानेर (राजपूताना) के पतेसे मंगायी जा सकती है।

इस ग्रन्थको बीकानेरके युवराज (अब महाराजा) श्री सादूलसिंहजी बहादुर-
ने पुरस्कृत करके अपनी काव्य-मर्मज्ञता और मातृ-भाषा-प्रेमका परिचय दिया है
जिसके लिये वे सब प्रकारसे बधाईके पात्र हैं।
पुस्तक प्रत्येक दृष्टिसे सुन्दर और संग्रहणीय है।

—नरोत्तमदास स्वामी

२ जसो बाबा भगाजी पंवार लेखक शिवसिंह मह्ाजी चोयल। आकार—
डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ६+३०। प्रथमावृत्ति, सं० २००२। मूल्य
लिखा नहीं। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)

चौधरी शिवसिंहजी चोयल राजस्थानी लोक-साहित्यके अच्छे अनुशीलक हैं।
ग्रामीण लोक-साहित्यका आपने अच्छा संग्रह कर रखा है। इस पुस्तिकामें सीरवी
जातिके ओक भक्त कवि भगाजी जसोका परिचय और उनकी कुछ लोक-प्रचलित
कविताओं दी गयी हैं। अन्तमें आई माताका संक्षिप्त परिचय दिया गया है जो
सीरवी जातिकी इष्टदेवी हैं।

३ सती कागणजी—लेखक आदि ऊपर लिखे अनुसार। पृष्ठ संख्या १२
प्रथम संस्करण, स० १९४४।

इस पुस्तिकामें चौधरीजीने सीरवी जातिमें होनेवाली सती कागणजी
संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उपरोक्त जसो भगाजीकी बनायी हुई 'निसाणी'
ते भक्त लोग प्रत्येक मासका शुक्लपक्षको द्वितीयाको ओकत्र होकर गाया
नेसाणीमें सतीजीका चरित्र विस्तारसे वर्णित है।

४ आई-आणद-विलास—लेखक—व्यास भवानीदास लालावत पुष्क
ादक—चौधरी शिवसिंह मह्ाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोल
ठ संख्या ४+१२०=१२४। प्रथमावृत्ति, सं० २००३। मूल्य १) प्रकाशक—
ावयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)।

इस ग्रन्थमें ६०३ छन्दोंमें राजस्थानी भाषामें भगवती आई माता
वर्णित है। इसके रचयिता व्यास भवानीदास आई माताके दीवान
समयमें बडेर बिलाड़ाके कामदार थे। आई माताके उपासक इसको
पूज्य मानते हैं जिस प्रकार सिख गुरु-ग्रन्थसाहबको और आर्यसमा
प्रकाशको। चौधरी शिवसिंहजीने इसका प्रकाशन करके इसे सर्वसाध

सुलभ कर दिया है। संपादन हस्तलिखित प्रतिके आधार पर योग्यताके साथ किया गया है। कठिन शब्दोंके अर्थ नीचे टिप्पणी देकर दिये गये हैं। ग्रन्थ पठनीय है।

—रंकण शर्मा

५ राजस्थानके ग्रामगीत, भाग १—संग्रहकर्त्ता—पं० सूर्यकरण पारीक तथा गजपति स्वामी। संपादक—ठाकुर रामसिंह और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—डबल क्राउन सालहपेजी। पृष्ठ संख्या १४+११६। पारीकजीका चित्र। प्रथमावृत्ति, सं० १९९७। मूल्य ॥।)। प्रकाशक—गयाप्रसाद ॲंड सन्स, आगरा।

पं० सूर्यकरण पारीक राजस्थानके अेक उत्कृष्ट साहित्यकार थे। सं० १९९५ में उनका अकस्मात देहावसान हो गया। उनकी स्मृतिमें बीकानेरके राजस्थानी साहित्य-पीठने सूर्यकरण पारीक राजस्थानी ग्रन्थमाळाकी स्थापना की जिसका प्रकाशन आगराके प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक गयाप्रसाद ॲंड सन्सने करना आरंभ किया। प्रस्तुत ग्रंथ उसी पुस्तकमालाका प्रथम ग्रंथ है। इसमें राजस्थानके ठेठ देहाती जीवनके ६३ लोकगीतोंका संग्रह है। साथमें हिन्दी अनुवाद तथा आवश्यक टिप्पणियां भी दी हुई हैं जिससे राजस्थानी न जाननेवाले भी सहज ही गीतोंका आनन्द ले सकते हैं। संगृहीत गीतोंमेंसे अधिकांश स्वयं स्वर्गीय पारीकजी के या उनके शिष्य पं० गणपति स्वामीके संग्रह किये हुअे हैं। ये गीत जिस प्रकार साहित्यकी अमर निधि हैं उसी प्रकार भारतीय ग्राम्य संस्कृतिका सजीव रूप भी। इनमें घरेलू जीवनकी मधुर झांकी पग-पग पर मिलती है। मनुष्यने कलाके नये-नये प्रयोगोंमें, और साहित्यकी नानाविध आलंकारिक शैलियोंमें, बहुत कुछ सौंदर्य बटोरा है परन्तु इस प्रयासमें उसने क्या कुछ खोया है इसका अन्दाज इन ग्राम्य गीतोंकी सहज सरल माधुरीमें थोड़ा देर तक निमग्न हुअे बिना नहीं मिलता। इनके नाम-हीन रचयिताओंके ऊपर अनेक विद्यापति और जयदेव निछावर होते हैं।

६ राजस्थान-भारती (त्रैमासिक पत्रिका)—संपादक—डाक्टर दशरथ शर्मा, अगरचंद नाहटा और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—रायल अठपेजी। मोटा अॅंटीक कागज। पृष्ठसंख्या २+१०४+२६=१३२। वार्षिक मूल्य ८)। महिलाओं, विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा सार्वजनिक संस्थाओंके लिअे रियायती

इस ग्रन्थको बीकानेरके युवराज (अब महाराजा) श्री सादूलसिंहजी बहादुर-ने पुरस्कृत करके अपनी काव्य-मर्मज्ञता और मातृ-भाषा-प्रेमका परिचय दिया है जिसके लिअे वे सब प्रकारसे बधाईके पात्र हैं।

पुस्तक प्रत्येक दृष्टिसे सुन्दर और संग्रहणीय है।

—नरोत्तमदास स्वामी

२ जती बाबा भगाजी पंवार—लेखक—शिवसिंह मह्राजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ६+३०। प्रथमावृत्ति, सं० २००२। मूल्य लिखा नहीं। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)

चौधरी शिवसिंहजी चोयल राजस्थानी लोक-साहित्यके अच्छे अनुशीलक हैं। ग्रामीण लोक-साहित्यका आपने अच्छा संग्रह कर रखा है। इस पुस्तिकामें सीरवी जातिके अेक सन्त कवि भगाजी जतीका परिचय और उनकी कुछ लोक-प्रचलित कविताअें दी गयी हैं। अन्तमें आई माताका संक्षिप्त परिचय दिया गया है जो सीरवी जातिकी इष्टदेवी हैं।

३ सती कागणजी—लेखक आदि ऊपर लिखे अनुसार। पृष्ठ संख्या १२। प्रथम संस्करण, स० १९४४।

इस पुस्तिकामें चौधरीजीने सीरवी जातिमें होनेवाली सती कागणजीका संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उपरोक्त जती भगाजीकी बनायी हुई 'निसाणी' दी है जिसे भक्त लोग प्रत्येक मासको शुक्लपक्षकी द्वितीयाको अेकत्र होकर गाया करते हैं। निसाणीमें सतीजीका चरित्र विस्तारसे वर्णित है।

४ आई-आणद-विलास—लेखक—व्यास भवानीदास लालावत पुष्करणा। संपादक—चौधरी शिवसिंह मह्राजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ४+१२०=१२४। प्रथमावृत्ति, सं० २००३। मूल्य १)। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)।

इस ग्रन्थमें ६०३ छन्दोंमें राजस्थानी भाषामें भगवती आई माताका चरित्र वर्णित है। इसके रचयिता व्यास भवानीदास आई माताके दीवान राजसिंहके समयमें बढेर बिलाड़ाके कामदार थे। आई माताके उपासक इसको उसी प्रकार पूज्य मानते हैं जिस प्रकार सिख गुरु-ग्रन्थसाहबको और आर्यसमाजी सत्यार्थ-प्रकाशको। चौधरी शिवसिंहजीने इसका प्रकाशन करके इसे सर्वसाधारणके लिअे

और उपयुक्त सामग्री मिल सकेगी। प्रतिभाका यह भी उद्देश्य होगा कि वह भाषा और विषयचयन तीनों दृष्टियोंसे वाचकोंको संतुष्ट करे।'

संपादक अपने उद्देश्यमें बहुत अंश तक सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ हुअे हैं। अंकमें संपादकीय सहित १७ लेख हैं। सभी लेख सुंदर हैं। श्री सीताराम ...रीका दानवोंके बीच शीर्षक साहसयात्राका आत्मचरितात्मक लेख हमें अच्छा लगा। संपादकीय टिप्पणियोंमें प्रगट किये गये विचार स्वस्थ ...नाके द्योतक हैं। पुस्तकमाला निस्संदेह हिंदीके लिअे गौरव बढ़ानेवाली सिद्ध ...।

नरोत्तमदास स्वामी

...८ हिमालय (साहित्यिक निबंधमाला)—संपादक—शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष ...री। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या १०० से ऊपर। कलापूर्ण आवरण। पुस्तकका मूल्य १)। वार्षिक मूल्य १०)। प्रकाशक—पुस्तक-भण्डार, हिमालय पटना।

यह साहित्यिक पुस्तकमाला पिछले जून महीनेसे प्रकाशित होने लगी है और ... तक सात अंक प्रकाशित हुअे हैं। सभी अंक प्रत्येक दृष्टिसे उत्कृष्ट हैं। लेखोंका ...व बहुत सुंदर है। हिंदीके पत्र-पत्रिका साहित्यको नियमित और स्वस्थ आलो... । इस पुस्तकमालाकी अेक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो साधारण पाठक ... विद्वान दोनोंके लिअे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—शिवशर्मा

वार्षिक मूल्य ६) । अेक अंकका मूल्य २॥) । प्रकाशक—प्रधानमंत्री, श्री सादू राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर ।

गत वर्ष बीकानेरके कतिपय प्रमुख विद्वानोंने बीकानेर-नरेश महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुरके संरक्षणमें श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट नाम संस्था स्थापित की थी । यह संस्था राजस्थानकी भाषा, साहित्य और इतिहा संबंधी खोजका कार्य करती है । यह त्रैमासिक पत्रिका इसी संस्थाकी मुखपत्रि है । इसका प्रथम अंक हमारे सामने है । इसमें नीचे लिखे महत्त्वपूर्ण लेख जो अपने विषयके अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं—पृथ्वीराज-रासो, जी माताका गीत, राजस्थानी साहित्य, कविवर जान और उसके ग्रंथ, चरल् शिलालेख, बीकानेरका अेक आदर्श संग्रहालय, राजस्थानकी वर्षा-संबंधी कह वतं, राजस्थानी मुहावरे । इनके अतिरिक्त लोक-साहित्य, प्राचीन राजस्थानी साहित्य और नवीन-राजस्थानी साहित्य इन तीन विभागोंके अन्तर्गत बहुत सुंदर सामग्रीका संचय किया गया है । अंतमें अेक लेख अंग्रेजीमें पृथ्वीराजरासो पर दिया गया है । इंस्टीट्यूटके प्रथम वर्षका कार्यविवरण भी साथमें दिया गया है जो अंतके २६ पृष्ठोंमें छपा है । अैसी सर्वांग-सुंदर पत्रिकाके प्रकाशनके लिअे विद्यानुरागी बीकानेर-नरेश, बीकानेरके प्रधानमंत्री, इंस्टीट्यूटके कार्यकर्ता और संपादक सभी हमारे हार्दिक अभिनंदनके पात्र हैं ।

—शम्भूदयाल सकसेना

७ प्रतिभा (साहित्यमाला)—संपादक-सीताराम चतुर्वेदी, हरिहरशरण मिश्र, भवानीप्रसाद तिवारी, रामेश्वरप्रसाद, रुद्रनारायण शुक्ल । आकार—डिमाई अठपेजी । पृष्ठसंख्या २+८२ । कलापूर्ण आवरण । अंक पुस्तकका मूल्य ॥≡) । वार्षिक मूल्य ११) । प्रकाशक –हिंद किताब्स, पोस्ट बाक्स १२६३, बंबई ।

पिछली विजयादशमीसे यह साहित्यिक निबंधमाला प्रकाशित होने लगी है । संपादकीय शब्दोंमें 'भावमय चित्र, रसवती कहानियां, विनोदपूर्ण व्यंग्य, चुटकुले, कलापूर्ण शब्दचित्र, विश्वसाहित्यके परिचयात्मक सारांश, भाषा की मनोहरताओंसे भरी हुई साहसपूर्ण यात्राअें, युगधर्मको पुकारकर जगा सशक्त कविताअें—सभीका प्रतिभाके अंकमें इस प्रकार पोषण होगा कि मोहक और स्वस्थ रूपोंसे परिचय

उपयुक्त सामग्री मिल सकेगी ! प्रतिभाका यह भी उद्देश्य होगा कि वह
और विषयचयन तीनों दृष्टियोंसे वाचकोंको संतुष्ट करे।'
क अपने उद्देश्यमें बहुत अंश तक सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ हुओ हैं।
में संपादकीय सहित १७ लेख हैं। सभी लेख सुंदर हैं। श्री सीताराम
दानवोंके बीच शीर्षक साहसयात्राका आत्मचरितात्मक लेख हमें
छा लगा। संपादकीय टिप्पणियोंमें प्रगट किये गये विचार स्वस्थ
द्योतक हैं। पुस्तकमाला निस्संदेह हिंदीके लिअे गौरव बढ़ानेवाली सिद्ध

नरोत्तमदास स्वामी

मालय (साहित्यिक निबंधमाला)—संपादक—शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष
आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या १०० से ऊपर। कलापूर्ण आवरण।
कका मूल्य १) । वार्षिक मूल्य १०)। प्रकाशक—पुस्तक-भण्डार, हिमालय
ना।

साहित्यिक पुस्तकमाला पिछले जून महीनेसे प्रकाशित होने लगी है और
क सात अंक प्रकाशित हुओ हैं। सभी अंक प्रत्येक दृष्टिसे उत्कृष्ट हैं। लेखोंका
बहुत सुंदर है। हिंदीके पत्र-पत्रिका साहित्यकी नियमित और स्वस्थ आलो-
इस पुस्तकमालाकी अेक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो साधारण पाठक
विद्वान दोनोंके लिअे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—गिरशर्मा

संपादकीय

राजस्थान अेक महान प्रांत है। यह अनेक महापुरुषोंका आकर है। इसके गौरवमय इतिहास पर देशके सभी वर्गोंको गर्व है। आज भी इसका नाम सुनकर [illegible] हो जाते हैं। इसके साहित्य पर बड़े-बड़े महारथी मुग्ध हैं। पर आज इसके उस पुरातन साहित्य पर, इसके महान गौरव पर, अंधकारके आव-रण-से पड़े हुअे हैं। इसकी भाषा, इसका साहित्य, इसका इतिहास, सबको कला सब अपने उद्धारके लिये तरस रहे हैं। इनको प्रकाशमें लाना प्रत्येक देश-हितैषीका, विशेषत: राजस्थानके सपूतोंका, परम आवश्यक कर्तव्य हो जाता है।

राजस्थानी साहित्यके प्रकाशनके छुटपुट प्रयत्न हुअे हैं पर वे अभी सब प्रकारसे अपर्याप्त हैं। व्यवस्थित रूपमें उसका आरंभ करनेकी आवश्यकता अभी तक बनी हुई है। इस दिशामें बहुत विलंब हो चुका है। अधिक विलंब घातक होगा। राजस्थानीका प्रकाशन इसी कर्तव्यका पालन करनेके लिअे किया जा रहा है।

आजसे कोई आठ वर्ष पूर्व राजस्थानी साहित्यके प्रकांड विद्वान पं० सूर्यकरण पारीकने इस विषयकी अेक व्यापक योजना बनायी थी और उसे कार्य-रूपमें परिणत करनेके लिअे स्वयं कटिबद्ध हुअे थे। उनने कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके उत्साही कार्यकर्ता श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी सिंहाणियाके सहयोगसे अेक उच्चकोटिकी शोध-संबंधी त्रैमासिक पत्रिकाके प्रकाशनकी योजना की। वे स्वयं उसके प्रधान संपादक बने। प्रथम अंक प्रेसमें छप ही रहा था कि दुर्भाग्यसे उनका अकस्मात देहांत हो गया। उनके सहयोगियोंने कार्यको चालू रखा और पत्रिका सजधजके साथ निकली। सर्वत्र उसका अपूर्व स्वागत हुआ। पर दुर्दैवको यह भी मंजूर न था। सिंहाणियाजीको अन्यत्र व्यावसायिक कामोंमें बहुत व्यस्त होना पड़ा जिससे पत्रिकाके ग्राहकादि नहीं बनाये जा सके। व्यवस्थाके अभावमें पत्रिकाको बंद करना पड़ा। तभीसे हम इस प्रयत्नमें थे कि प्रकाशन और व्यवस्थाका कोई अच्छा प्रबंध हो जाय तो पत्रिकाको शीघ्र-से-शीघ्र पुनर्जीवित किया जाय।

अब राजस्थानी-साहित्य-परिषदकी शोधसंबंधी निबंधमाळाके रूपमें इसका प्रकाशन किया जा रहा है। अत्यंत हर्षका विषय है कि निबंधमाळाका प्रकाशन भारतके स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी मंगलमय तिथिसे आरंभ हो रहा है।

मातृभूमि और मातृभाषाकी सेवाके इस पवित्र यज्ञमें भाग लेनेके लिअे हम समस्त राजस्थानी, अेवं राजस्थान-प्रेमी, बंधुओंको उल्लास और उत्साहके साथ आमंत्रित करते हैं। विद्वानोंसे हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान करें। आपके सहयोग पर ही हमारी सफलता निर्भर है।

निबंधमाळाका आरंभ अभी छोटे रूपमें किया जा रहा है। कागज और प्रेस संबंधी कठिनाइयोंके कारण उसे हम सजधजके साथ नहीं निकाल सके हैं। हमें इसके इस रूपसे संतोष नहीं है पर वर्त्तमान परिस्थितियोंमें हमें किसी-न-किसी प्रकार निभा लेना है। नीचे लिखे परिवर्तन हम शीघ्र करना चाहते हैं—

(१) निबंधमालाकी पृष्ठसंख्या बढ़ा दी जाय— प्रत्येक भाग कम-से-कम २०० पृष्ठोंका निकले।

(२) राजस्थानी कळाके उत्तमोत्तम नमूने निबंधमालाके प्रत्येक भागमें प्रकाशित हों।

(३) आधुनिक राजस्थानी साहित्यके लिअे प्रत्येक भागमें लगभग ५० पृष्ठ रहें (आधुनिक राजस्थानी साहित्यकी अेक मासिक-पत्रिका मरु-भारतीके प्रकाशनकी योजना भी की जा रही है)।

(४) निबंधमाळाके समस्त लेखकोंको लेखोंके पारिश्रमिकके रूपमें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जाय।

हमारी इन इच्छाओंकी पूर्ति राजस्थानके उदार और साहित्यप्रेमी राजा-रईसों, सरदारों, सेठ-साहूकारों आदि धनी-मानी सज्जनोंकी सद्भावना पर अवलंबित है पर हमें यह दृढ़ विश्वास है कि हम उनकी यह सद्भावना प्राप्त करनेमें समर्थ होंगे। पत्रिकाके आरंभमें दिया हुआ निम्नलिखित मूलमंत्र हमारे विश्वासको सदा अटल रखेगा—

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूति-कर्मसु
भविष्यतीत्येवं मनः कृत्वा सततमव्यथैः

उठो, जागो और बिना घबराये कल्याणके कामोंमें लग जाओ,
मनमें यह दृढ़ धारणा बना लो कि यह काम तो होगा ही।

राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता

उद्देश्य

(१) प्राचीन राजस्थानी साहित्यकी शोध और प्रकाशन
(२) राजस्थानी लोक-साहित्यका संग्रह और प्रकाशन
(३) राजस्थानी कलाका अध्ययन और विकास
(४) नवीन राजस्थानी साहित्यका निर्माण और प्रकाशन

प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी— शोध-संबंधी निबंधमाला
(२) राजस्थान-भारती ग्रंथमाला—
प्राचीन और नवीन राजस्थानी साहित्यकी उच्च कोटिकी ग्रंथमाला
(३) जयश्रीराम रांकण पुस्तकमाला—
धार्मिक और लौकिक साहित्यकी सस्ती लघु ग्रंथमाला
(४) राजस्थानी पाठ्यपुस्तक-माला
(५) *शंकरदान नाहटा राजस्थानी पुरस्कार*

प्रस्तावित प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी भाषाकी परीक्षाएं
(२) भाषण-मालाएं
(३) मरुभारती— राजस्थानी भाषाकी मासिकपत्रिका

(१)

श्री शंकरदान नाहटा राजस्थानी पुरस्कार

यह पुरस्कार प्रति वर्ष राजस्थानी भाषाके सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ पर दिया जायगा। प्रथम पुरस्कार संवत २००४ तक प्रकाशित राजस्थानी ग्रंथ पर दिया जायगा। विचारके लिये प्रत्येक ग्रंथकी चार-चार प्रतियां अक्षय-तृतीया सं० २००५, तक पीठके कार्यालयमें पहुंच जानी चाहिये। अप्रकाशित ग्रंथोंपर भी विचार किया जा सकेगा।

साहित्य-मंत्री

राजस्थानी साहित्य-पीठ

बीकानेर

(२)

श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत राजस्थानी पुरस्कार

यह पुरस्कार टिकाना रावतसरकी रानी श्री चूंडावतजी द्वारा स्थापित किया गया है और प्रति तीसरे वर्ष राजस्थानी भाषाके सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ पर दिया जायगा। प्रथम पुरस्कार विजयादशमी, सं २००४, पर दिया जायगा। विचारके लिये प्रत्येक ग्रंथकी पांच-पांच प्रतियां भाद्रपद पूर्णिमा, संवत २००४, तक इंस्टीट्यूटके कार्यालयमें अवश्य पहुँच जानी चाहिये। अप्रकाशित रचनाओं पर भी विचार किया जा सकेगा।

प्रधान मंत्री

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट

बीकानेर